

गाडी -22

मदुरैल पत्रिका

यात्रा-1

दक्षिण रेलवे-मदुरै मंडल



राजभाषा विभाग मदुरै मण्डल
Rajbhasha Department
Madurai Division



सतर्कता सप्ताह समारोह के दौरान विमोचित - नवम्बर - 2022





पी.अनंत P.Ananth
मंडल रेल प्रबंधक
Divisional Railway Manager

मंडल कार्यालय/Divisional Office
मदुरै मंडल Madurai division
Phone/Fax:0452-2308000

संदेश

वर्ष 2022 के प्रथम अंक को पाठकों को प्रदान करते हुए अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। पिछले कुछ वर्षों से नियमित रूप से वर्ष में मदुरैल पत्रिका का दो अंक प्रकाशित किये जा रहे हैं।

**தொட்டனைத் தூறும் மணற்கேணி மாந்தர்க்குக்
கற்றனைத் தூறும் அறிவு.**

குறள் எண் - 396

तोदुनै चूरुम मणरकेणी मांदर्कु

कदुनै चूरुम अरिवु ।

तिरुक्कुरल सं - 396

जिसका अर्थ है - नदी के किनारे के रेत में गड्ढा खोदने पर जैसे पानी मिलेगा और जितना उसका प्रयोग करेंगे उतना बढ़ता रहेगा वैसे ही जितना हम पढ़ेंगे, सीखेंगे उतना ज्ञान बढ़ेगा।

इस मदुरैल-पत्रिका के डिजिटल प्रकाशन में हमने तमिल और अंग्रेजी लेखों का भी स्थान दिया है। आशा है कि सभी प्रकार के पाठकों को यह पत्रिका आकर्षित करेगी और सभी के लिए ज्ञान-वर्धक होगा।

(पी.अनंत P.Ananth)





नारायणन.आर NARAYANAN.R
वरिष्ठ मंडल इंजी/स Sr.DEN/Co.
& उप मुराधि / मदुरै Dy.CRA/MDU

मंडल कार्यालय/Divisional Office
मदुरै मंडल Madurai division
Phone/Fax:0452-2308192

संदेश

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य में छोटा-बड़ा नहीं होता। वाक्यम् रसात्मकं काव्यं, शब्दं रसात्मकं काव्यं कहा गया है। मदुरै मंडल के कर्मचारियों के साहित्यिक अभिरुचि बढ़ाने, उजागर करने के लिए मदुरैल पत्रिका का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। लेख, कविता, कार्टून, प्रश्नमंच, चुटकुले आदि कई विधाओं को देखते हुए आशा की जा रही है कि सभी प्रकार के पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

इस पूरी दुनिया में इतना अंधकार नहीं है कि वह एक छोटी सी मोमबत्ती का प्रकाश बुझा सके। याद रखें कि असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतंगमय। मदुरैल पत्रिका इसका चरितार्थ करने का एक प्रयास है।

पाठकों की प्रतिक्रिया, सुझाव, लेख आदि की प्रतीक्षा है ताकि यह पत्रिका और निखर सके।

आर. नारायणन

(आर.नारायणन R.Narayanan)





डॉ राजेश चंद्रन DR.Rajesh Chandran
वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक
Sr.Divisional Operating Manager

मंडल कार्यालय/Divisional Office
मदुरै मंडल Madurai division
Phone/Fax:0452-2308600

संदेश

तमिलनाडु के सिवा बाकी सभी राज्यों में हिंदी कम से कम एक वैकल्पिक विषय के रूप में है। तमिल भाषा और हिंदी के अक्षर में बाकी भाषाओं की तुलना में बहुत फरक है। फिर भी मैंने देखा कि दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा जैसे निजी संस्थानों के माध्यम से हिंदी पढ़ने में लोग बहुत रुचि दिखाते हैं।

मेरे हिंदी कार्यभार इस कार्यालय में संभालते हुए कुछ ही दिन हुआ है, पर मैंने देखा कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मदुरै से लगातार पांच-छः साल शील्ड जीते हैं। महाप्रबंधक के राजभाषा चल शील्ड भी कई बार जीते हैं। मदुरै के कर्मचारी हिंदी कार्यान्वयन में तत्पर हैं।

यह मदुरै-पत्रिका बहुत ही रंगीन है। अच्छे-अच्छे लेख हैं। मुझे उम्मीद है कि सभी पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

... ..
राजेश चंद्रन

(डॉ राजेश चंद्रन DR.Rajesh Chandran)





ए.श्रीनिवासन A.SRINIVASAN
राजभाषा अधिकारी RAJBHASHA ADHIKARI
मदुरै MDU

मंडल कार्यालय/Divisional Office
मदुरै मंडल Madurai division
Phone/Fax:0452-2308012

संदेश

संपादकीय

हिंदी अभी भी अधिकांशतः अनुवाद की भाषा ही रही है। मूल चिंतन हिंदी में होने पर ही हिंदी का विकास तेजी से होगा। आजकल अनुवाद के कई साधन एवं एप आ गये हैं। भूल जाते हैं कि मानव के मस्तिष्क के बदले में कोई भी मशीन को लाया नहीं जा सकता है। विशेषतः भाषा के क्षेत्र में जिसमें भावनाएँ बहुत अधिक हैं, अनुवाद साधन, विफल हो जाता है। द्व्यर्थक शब्दों को स्थानानुसार कोई भी मशीन समझ नहीं सकता। ध्वन्यात्मक शब्दों को वह बिलकुल उस ध्वनि में पढ़ नहीं सकता। सभी मशीन केवल बाइनरी भाषा ही जानता है। यद्यपि मानव अधिकाधिक प्रयास करता है फिर भी वह भाषा सागर के तट पर ही वह सब जादू दिखा पाता है। गहराई में जाने पर मोति मिल सकता है। पर हर बार नहीं मिलता और हर किसी को नहीं मिलता।

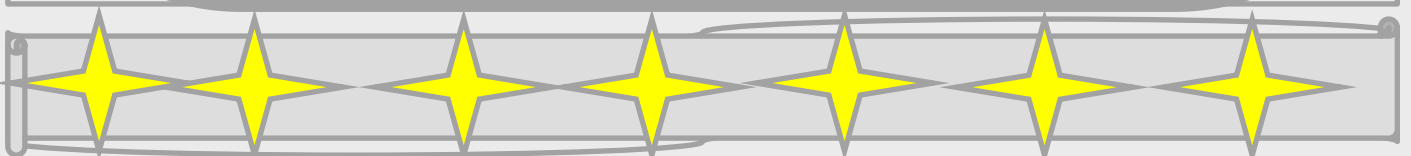
हमेशा मैं कहा करता हूँ कि हिंदी की तरफदारी अधिकांश रूप में हिंदीतर भाषी ने ही की है। महात्मा गांधीजी, विठोबा, स्वामी दयानंद सरस्वती, सेठ गोविन्ददास, निजलिंगप्पा, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी आदि अनगिनत नाम हैं। यह भी मेरा विचार है कि मातृभाषा को समझने के लिए भी अन्य भाषाओं की जानकारी होनी है। क्योंकि भाषा की धारा सभी पहलुओं को जोड़ते हुए बहता रहता है।

खुशी की बात है कि इस मदुरैल पत्रिका के अंक के लिए अधिकांश कर्मचारियों, अधिकारियों ने योगदान किया है। हिंदी की ओर केंद्रीय सरकार के कर्मचारियों की रुचि बढ़ रही है। आशा की किरणें दिख रही हैं।

स्वास में आस है, आस में जीवन है। अगले अंक द्वारा मिलने तक आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में



(ए.श्रीनिवासन A.SRINIVASAN)





संरक्षक	अनुक्रम	पन्ना संख्या.
श्री पी.अनंत मंडल रेल प्रबंधक	i. मंडल रेल प्रबंधक का संदेश	
मार्गदर्शक व सलाहकार	ii. उप.मुराधि एवं वरि.मंडंजी/समन्वयन का संदेश	
श्री आर.नारायणन वरि. मंडल इंजीनियर /समन्वयन	iii. उप मुराधि एवं वरि.मंप्र का संदेश	
डॉ राजेश चंद्रन वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक	iv. संपादकीय	
संपादक	1. सतरंगी इंद्रधनुष : श्री पी.अनंत, मंडल रेल प्रबंधक/मदुरै	7-9
श्री ए.श्रीनिवासन राजभाषा अधिकारी	2. श्री नारायण गुरु : डॉ राजेश चंद्रन, वरि.मंप्र, मदुरै	10-11
उप संपादक	3. मैंने हिंदी सीखी : श्री आर.नारायणन, वरि. मंडंजी/सम./मदुरै	12-13
सुश्री एल.मुत्तुलक्ष्मी वरि.अनुवादक	4. दुल्हन - कविता & कबीर के दोहे - व्याख्या : श्रीमती बी.साई सुन्दरी	13
श्री सचिन सुमार सिंह अनुवादक	5. एक और दुनिया देख तो लिया - श्री ए.श्रीनिवासन, राधि	14-17
टंकण एवं प्रस्तुति	6. भगवती चरण वर्मा - एक परिचय : डॉ महेश्वरी रंगनाथन,	18-21
सुश्री बी.वेण्माल, मुख्य टंकक	7. सेवानिवृत्त वराधि/चेन्नै	22-23
अन्य सहायता	8. स्मरणीय यात्रा : श्री पी.श्रीराम, तकनीशियन/।।/मदुरै	24
श्री आर. सैदिल कुमार हिंदी विभाग	9. देश, नागरीक और विकास : श्री पी.श्रीराम, तकनीशियन/।।/मदुरै	24
	10. कार्टून : श्री वी.राधा, पीआई/मदुरै मंडल	24
	11. चमकता भारत - कविता : डॉ पी गणेशन, एसिस्टेंट प्रोफसर, हिंदी विभाग, श्रीकृष्णा आर्ट्स व साइंस कालेज, कुनियमुत्तूर, कोयम्बतूर	25
	12. जीवन का कठोर सत्य : श्रीमती बी.वेण्माल, मुख्य टंकक, मदुरै	26
	13. तमिल सीखते हैं: श्रीमती बी.वेण्माल, मुख्य टंकक, मदुरै	28-29
	14. हिंदी- उर्दू शब्द : श्री कलैसेल्वन, वरि.लिपिक, काशा, मदुरै	31-32
	15. शब्द जादू - जादू के शब्द : श्रीमती मीना कुमारी, मुकाधी, मदुरै	33
	16. भारत का अमृत महोत्सव : श्री सचिन कुमार सिंह, अनुवादक	34-36
	17. जीवन सत्य है - संघर्ष : श्री सचिन कुमार सिंह, अनुवादक, मदुरै	38
	18. युद्ध & आज़ादी - कविताएँ : विनय कुमार चौरासिया, वरि.लिपिक	39
	19. हिम्मत और जिंदगी : विनय कुमार चौरासिया, वरि.लिपिक, मदुरै	40-41
	20. अनुवाद सरलीकरण : श्रीमती मुत्तुलक्ष्मी, वरिष्ठ अनुवादक, मदुरै	42-44
	21. उषा प्रियंवदा की कहानियों का कथासार - सुश्री महेश्वरी, शोध छात्रा, नेहरू आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज, टी.एम.पालयम्, कोयम्बतूर	45-46
	डॉ पी.गणेशन, एसिस्टेंट प्रोफसर, हिंदी के मार्गदर्शन में	
	1. मदुरै मंडल में हिंदी कार्यान्वयन	47-49
	2. समाचार पत्रों में मदुरै मंडल - राजभाषा पहलू	50-53
संपर्क - राजभाषा अनुभाग, मंडल कार्यालय, दक्षिण रेलवे, मदुरै तमिलनाडु - 625 016 फोन - 72045		
इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्रियों के विचार लेखकों के अपने हैं, यह आवश्यक नहीं है कि संपादक इनसे सहमत हो।		

जिस किसी भाषा के भी अच्छे विषयों को अपनी भाषा में लाना मेरे विचार में अनुवाद का प्रमुख उद्देश्य है। यद्यपि मेरी मातृभाषा हिंदी नहीं है फिर भी शुरू से ही दिल्ली में पढ़ने की वजह से हिंदी भाषा का प्रयोग एक आदत सी बन गई है। हालांकि हम लोग इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ते थे परंतु स्पोर्ट्स पीरियड में या रिसर्च या खाली समय में या बस स्टैंड में या स्कूल बस में ज्यादातर बोलचाल की भाषा हिंदी हुआ करती थी। जिसमें अंग्रेजी भाषा के शब्द भी प्रयोग किए जाते थे। इस तरह हिंदी का प्रयोग लगातार करने की वजह से बहुत बार, जब भी हमें किसी से बात करना होता था, हिंदी डी फॉल्ट भाषा बन जाता था। अंग्रेजी का प्रयोग इंग्लिश टेक्स्ट या अन्य इंजीनियरिंग सब्जेक्ट पढ़ाई वर्गैरह में किया जाता था। लेकिन उसमें भी डिस्कशन आपस में हिंदी का ज्यादा प्रयोग करते थे।

भाषा के प्रयोग का हमारा मकसद यह है कि दूसरे से हम क्या पूछ रहे हैं, हम क्या बताना चाहते हैं - स्पष्ट रूप से सामनेवाले को समझ में आए। हिंदी एक ऐसी भाषा है, उसमें किसी भी अन्य भाषा का शब्द प्रयोग करते समय कोई संकोच नहीं होता। यह मेरा मानना है कि हिंदी भाषा की यह स्वभाविकता है। इस प्रकार के प्रयोग से हम शुद्ध हिंदी का दुरुपयोग कर रहे हैं जबकि स्कूल में हिंदी को एक सब्जेक्ट के रूप में पढ़ते समय, लिखते समय, ग्रामर का प्रयोग करते समय शुद्ध हिंदी का प्रयोग करना अनिवार्य था। परंतु बोलचाल की भाषा हमेशा हिंदी और अंग्रेजी के शब्द मिलाकर होती थी। उसमें भी हिंदी का प्रयोग अधिक होता था। रेलवे में अभी तक की पोस्टिंग उत्तर भारत में या पूर्व भारत में हुआ है - जैसे कि दिल्ली, झारखंड, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश....। इसलिए हिंदी के अलावा कोई अन्य भाषा प्रयोग करने की जरूरत नहीं पड़ी। दूसरी तरफ से जवाब भी हिंदी में ही आ जाता था और समझाने का माध्यम भी हिंदी होता था। अब की पोस्टिंग दक्षिण भारत में मदुरई मंडल में हुआ है और यहां पर भी आदत से मजबूर, हिंदी में के शब्द मुँह पर तुरंत आ जाती हैं।

श्री रवि वल्लूरी कई पुस्तकें लिख चुके हैं और प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक के रूप में दक्षिण रेलवे में काम करते हुए दिसम्बर 2022 में सेवा निवृत्त हुए हैं। सतरंगी - रंगों का त्योहार शीर्षक में जो उन्होंने लिखा है। श्री रवि जी के अनुमति के साथ उसी का एक लघु कथा का अनुवाद प्रस्तुत कर रहा हूँ।

"2020 का आरंभिक काल था, कोरोना विश्व भर अपनी पूरी ताकत को दिखाने के ताक में था। कोरोना महामारी अब भी विश्व को अपने पंजे से पूरी तरह न छुड़ाया था।

जबकि होली के सिलसिले में दिल्ली के धनाढ्य परिवार समूह अपने-अपने घर के बुलंद दरवाजे से जहाँ भारत में निर्मित पश्चिमी शैली की शराब पानी की तरह बहता था और रंग एक दूसरे पर खूब छिटकाया जाता था।

उन महलों के सामने निराश्रित लोगों का समूह बेतहाशा इस इंतज़ार में बैठे थे कि परोसे जानेवाले पनीर टिका और गलौटी कबाब के एकाध टुकड़े मिल जाएँ और अपनी भूख को थोड़ा-सा मिटा सके।

होलिकोत्सव विश्वास, मस्त-मौजी एवं जोश के साथ मनाया जा रहा था। भारतीय उप-महाद्वीप के विभिन्न हिंदू परंपरा के साथ होली का त्योहार अपनी गूँज बजा रही थी। कड़ियों का मत है कि यह उत्सव पिछली विफलताओं एवं पापों का अंत है, दूसरों के साथ मिल-जुलकर मतभेद को खत्म करने का है, और यह दिन भूल जाने एवं माफ करने का दिन है।

लोग अपने ऋण को दे देते हैं या जो ऋण आना है उसे माफ करके छोड़ देते हैं, और नए सिरे से अपनी जिंदगी फिर से शुरू करते हैं। होली वसंत काल का प्रारंभ है। वसंत काल में परितर्कित मौसम को लोग चखते हैं और नई दोस्ती करते हैं।

धनी के लिए चमकीला है और गरीब के लिए बिलकुल अंधकार है। गरीब की चाह है कि कम से कम दिन में एक बार भर-पेट खाया जाएँ। हर बार का खाना जीवन बचाने और जिंदा रहने के लिए होता था।

राजीव और संगीता का नाटकीय प्रवेश रंगों का कोलाहल रहा। दोनों सम्मानित दंपति हैं और समाज में महान हस्तियाँ हैं।

सिलसिला फिल्म से रंग बरसे... जो होली प्रधान गीत था, बज रहा था और विश्वविद्यालय के सहपाठी और नए परिचित एवं दोस्त नाच रहे थे और बेशरम चिल्ला रहे थे। हिंडोला के रूप में तेजतर्रार वह समूह अपनी चरमसीमा पर थी।

सुनिल, जो मेजबान था और डॉ राजीव गुप्ता और संगीता का घनिष्ठ दोस्त था, राजीव की सहमति से न पीनेवाले कुछ लोगों के पेय पदार्थ में शराब मिलाया।

परिस्थिति खराब हो रही थी और ज्यादातर नशे में थे। यहाँ तक कि इन धनी लोगों के ड्राइवर एवं नौकरों ने मन-बहलाया एवं वहाँ उत्सव में उपस्थित दंपतियों पर गंदी टिप्पणियाँ करने लगे।

संगीता ने अचानक बताया कि - राजीव, मैं ठीक नहीं हूँ और उल्टी आ रही हूँ। साँभाग्य से डॉ तनवीर, एक दोस्त, उस समूह में था।

बताते-बताते संगीता बेहोश हो गयी और उसे होश में लाने के लिए डॉ तनवीर ने बहुत कोशिश की। उन्हें पासवाले अस्पताल को तत्काल ले गये, और सांस लेने में तकलीफ व तेज बुखार कहकर भर्ती किया।

अस्पताल के आईसीयू वार्ड में अपनी पत्नी को ले जाते हुए बेचारा राजीव लाचार होकर देख रहा था। विशेषज्ञ एक के बाद एक टेस्ट कर रहे थे। कई दिनों तक संगीता का जीवन डॉवाडोल रहा।

राजीव को उनके माँ-बाप एवं सास-ससुर ऐसे गलत व्यवहार के लिए डाँटने लगे। सुनिल भी ऐसे लापरवाही के लिए डाँट खा रहा था। सभी भगवान से प्रार्थना करने लगे और जान बचाने की विनती करने लगे।

लेकिन संगीता न बची। कई दिन बीमार रहने के बाद दिवंगत हो गयी थी। डॉक्टरों ने सोचा कि शायद फ्लू हैं।

संगीता, जो नामी कॉलेज से एम.बी.ए हैं, होली के कुछेक दिन पूर्व ही विदेश से आयी थी। वह एक MNC में काम करती थी और लगभग पंद्रह दिन औद्योगिक टाउन में फैक्टरी में काम करके आयी थी।

“क्या यह रोग वह वहाँ से ले आयी”? - राजीव का मन में बार-बार यह विचार आ रहा था।

दाह संस्कार के बाद, पारिवारिक जन और जो भी उस होलिकोट्सव में भाग लिये थे, आइसोलेशन में रखे गये थे। इस कारण लोदी श्मशान-घाट में संगीता की राख-अस्ति कई दिन पड़ी रही।

हाँ जिंदगी में कई रंग हैं, केवल सतरंगी नहीं हैं।

राजीव एवं संगीता और उनका परिवार अपने जीवन के सर्वोत्तम एवं चमकीला रंग देखे थे। लेकिन रंगहीन सफेद, ग्रे एवं काला रंगों ने सदा के लिए उन्हें घेर लिया। जैसे कि राजीव के घर के सामने इकट्ठा हुए लोग निराश्रित हमेशा रहते आए हैं।

डॉ राजीव गुप्ता को अब आइसोलेशन की ज़रूरत नहीं, पर वह टूट गया था।

प्रत्येक दिन वह अपने चेहरे और भावों को छिपाता रहा और वह उत्साह-हीन हो गया। उसने अपनी पत्नी को अनोखा फ्लू के कारण खो दिया।

तब तक जीवन के शब्दकोश में कोविड-19, क्वारंटाइन, मास्क, सामाजिक दूरी, सैनिटाइसर, वेक्सीनेशन आना बकाया था।

लेकिन यह घटना डॉ राजीव को उत्तरदायित्व का एक गहरा पाठ पढ़ाया। जब उस दुःखदायक दिन में दोस्तों के साथ शराब पी रहा था तब उन्होंने उस महल के सामने गरीब लोगों को देखा था ।

उस खतरनाक महामारी कोरोना के कारण कुछ ही दिनों में देश भर में लॉक-डाउन घोषित किया गया था। डॉ राजीव अपने दुःख और कष्ट को झेलते हुए, पीछे रखते हुए अपने काम में पूरी तरह से जुट गया। राजीव ने जो भी इस बीमारी से पीड़ित थे सबकी भरपूर सेवा करने का दृढ़ संकल्प किया था।

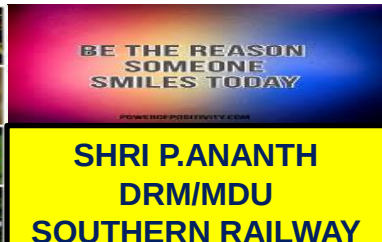
वह अस्पताल में समय न देखते हुए पूरा तन-मन से रात-दिन काम किया और रात में सड़कों पर रह रहे घर-हीन लोगों को खाना खिलाया।

डॉ राजीव ने अपनी कॉलनी में परियोजना आरम्भ किया जिसमें युवाओं की मदद से घर में बचा खाना, और पुरान कपड़ों को बंटवाना प्रारंभ किया। बेचारे गरीब लोगों की सेवा करना अपना जीवन लक्ष्य बनाया।

वह वास्तविक रूप में अस्पताल में रोगियों को और बाहर रहे गरीबों के लिए फ्रंटलाइन कार्यकर्ता बना।

इस तरह डॉ राजीव गुप्ता वास्तव में “आशा की किरण” बने।

इस कहानी में यह भाव प्रस्तुत किया कि जीवन केवल सतरंगी ही नहीं हैं, सफेद, ग्रे, काला भी मिलता है। इसे इस सामयिक कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है। सेवा परमो धर्म: है कि सीख मिलती है। अहंकार और दिखावा कभी भी झटके में टूट सकता है।



भूमिका:

जिसके बारे में जितना भी कहूँ वह कम होगा फिर भी उसके परिचय देने से शायद पाठक उस महान पर रुचि लेकर अपने जीवन को उनके लक्ष्यों का अनुपालन कर पार करा सकते हैं। नारायणगुरु एक हिंदू अध्यात्मवादी और भारत के समाज सुधारक थे। नारायणगुरु का जन्म ईळवर समुदाय में ऐसे समय में हुआ था जब पूरे भारत में फैले जातिगत अत्याचारों के कारण केरल में पिछड़े और दलित वर्गों को कई बुनियादी अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। अपने शिष्यों द्वारा गुरुदेव कहे जाने वाले, नारायणगुरु ने उन लोगों का मार्गदर्शन किया और सत् मार्ग पर चलने की राह दिखाई, जिन्होंने जाति प्रतिबंधों को सहन किया और बारंबार सोचने लगे कि वे इस दुनिया में क्यों पैदा हुए।

श्री नारायणगुरु का जीवन

नारायणन का जन्म 28 अगस्त, 1855 को केरल के तिरुवनंतपुरम के पास सेंबळंदह गांव में माडन आसन और कुट्टी अम्मल के घर हुआ था, जो ईळव समुदाय के किसान थे। उनके माता-पिता उन्हें प्यार से नानू बुलाते थे। उनके पिता माडन एक किसान थे, लेकिन थोड़ी संस्कृत भाषा जानते थे इसलिए वे रामायण और महाभारत जैसी कहानियों को ग्रामीण कहानियों के रूप में ग्रामीणों को सुनाते थे। वह ग्रामीणों के लिए एक "आसान" (शिक्षक) भी थे। नारायणन, जो अपने पिता की कहानियों को दिलचस्पी से सुनते थे, और पिता जब बाहर जाते थे तब अपने पिता की तरह गाँववालों को कहानियाँ सुनाने में मग्न आता था।

उनके चाचा कृष्णन वैद्यन एक आयुर्वेदिक चिकित्सक थे। संस्कृत जानने वाले विद्वान भी। उनकी सिफारिश पर, एक स्थानीय स्कूल शिक्षक और गांव के अधिकारी, सेम्बळंदी पिल्लै ने नारायण को घर पर बुनियादी शिक्षा दी। इसके बाद उनके पिता और चाचा ने उन्हें तमिल और संस्कृत भाषाओं की मूल बातें और अवधारणाएँ सिखाईं। उन्होंने सिद्धरूपम, बालप्रोपाधानम, अमरकोशम आदि जैसे व्यावसायिक विषयों को भी पढ़ाया।

15 साल की उम्र में अपनी मां को खोने के बाद, नारायणन ने अपना अधिकांश समय अपने पिता के शिक्षण कार्य और अपने चाचा के आयुर्वेदिक चिकित्सा कार्य में मदद करने में बिताया। बाकी समय वह पास के गाँव के मंदिर में देवता की पूजा करने में लगा रहता था। उसके बाद नारायण की तीव्र बुद्धि को देखकर, उन्हें उनके घर से 50 मील दूर करुणागपल्ली में एक प्रसिद्ध विद्वान कुम्ममपिल्ली रमन पिल्लै गुरु के यहाँ अध्ययन करने के लिए भेजा गया था। वहाँ उन्होंने अच्छी तरह से संस्कृत सीखी। वहाँ उन्होंने वेदों और उपनिषदों का अध्ययन किया। उसके बाद उन्होंने पास के एक स्कूल में शिक्षक के रूप में काम किया। उनकी क्षमताओं से चकित होकर क्षेत्र के लोग उन्हें प्यार से "नानू गुरु" कहने लगे।

अपना गाँव लौटने के बाद, नारायणन ने स्थानीय बच्चों को शिक्षित करने के लिए वहाँ एक स्कूल शुरू किया। उस स्कूल में शिक्षा प्रदान करते हुए, बाकी समय वे मंदिर गए जहाँ उन्होंने एक सन्यासी की तरह रहे और कविताएँ लिखना, दर्शन और दृष्टान्तों को ग्रामीणों को सुनाना जारी रखा।

नारायणन का परिवार उसे सन्यासी न बनने के लिए बहुत मिन्नत करते रहे और उसकी शादी साधारण तरीके से गांव के एक पेशेवर चिकित्सक की बेटी काळियम्मा से करा दी। नारायणन एक सन्यासी की तरह ही भटक रहे थे इसलिए उनकी पत्नी अपने पिता के घर चली गई। अपने पिता और पत्नी की मृत्यु के कुछ समय बाद वे आध्यात्मिक तपस्वी के रूप में कई स्थानों की यात्रा करने लगे।

"ज्ञान वो सबसे शक्तिशाली हथियार है जिससे आप पूरी दुनिया बदल सकते हैं।" ~नेल्सन मंडेला

"Knowledge is the most powerful weapon which you can use to change the world." ~ Nelson

Mandela

आश्चर्य की बात यह है कि अच्छा करने से अच्छा और बुरा करने से बुरा मिलते हुए देखकर भी लोग क्या बुराई करते हैं, सोचते हैं !!

तिरुवनंतपुरम जाने के बाद, नारायणन तैक्काडु अय्यावु नाम के एक तमिल व्यक्ति से परिचित हुए, जो एक ब्रिटिश सरकारी कर्मचारी के रूप में काम करता था। वह एक शिक्षक भी थे जिन्होंने सिलम्बू, योग कला आदि सिखाया। उन्होंने उनसे ध्यान और योग जैसी कलाओं के साथ-साथ तमिल का भी गहरा ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने तिरुमन्दिरेम जैसे तमिल ग्रंथों का भी अध्ययन किया। 23 वर्ष की आयु में, उपर्युक्त नारायणन आठ साल तक एक युवा सन्यासी के रूप में रहे, कन्याकुमारी जिले के पोर्ट्रेयाडी के पास के शहर में एकान्त ध्यान करते रहे।

उन्होंने इस अस्पताल में ध्यान और योग जैसी कलाओं से प्राप्त अनुभवों के आधार पर मलयालम में आत्मोपदेश सतकम नामक एक सौ छंदों की रचना की। इसके माध्यम से उनके कई काव्य और दार्शनिक विचारों को जाना गया। ऐसे समय में जब एक अछूत समाज में जन्म लेनेवालों को शिक्षा से वंचित रखा गया था, वे मलयालम, तमिल और संस्कृत जैसी भाषाओं के पारंगत थे और उन भाषाओं में वेदों और उपनिषदों को सीखा और एक सन्यासी के रूप में घूमते रहे।

नारायण गुरु ने कई मंदिरों का निर्माण किया और मंदिर में प्रवेश करने का एक नया तरीका पेश किया, जब नायर वर्ग, जो नंबूदिरियों के बाद के माने जाते थे, मंदिरों के गर्भगृह में प्रवेश नहीं कर सके। उन्होंने केरल में त्रिशूर, कन्नूर, अंजुथेंगु और कोळिक्कोड जैसी जगहों पर मंदिर बनवाए। उन्होंने कर्नाटक के मैंगलोर क्षेत्र, तमिलनाडु में नागरकोइल और श्रीलंका में कोलंबो में कुछ महत्वपूर्ण मंदिरों का निर्माण किया और वहां शिव, विष्णु और देवी जैसे देवताओं को प्रतिष्ठित किया। उन्होंने इन मंदिरों में पूजा के लिए संस्कृत और मलयालम में कुछ मंत्र भी बनाए। इनमें सुब्रह्मण्य शतकम्, काली नाटकम्, देवी दशकम्, शारदा देवी स्तुति आदि महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

श्री नारायण गुरु ने श्री नारायण धर्म परिपालन सभा के माध्यम से कई स्कूलों और संस्थानों का निर्माण किया, आध्यात्मिक पथ में नई प्रथाओं का निर्माण किया और पिछड़े और दलित वर्ग के लोगों को एक नया रास्ता दिखाया। उन्होंने पिछड़े और निम्न वर्ग के लोगों से संस्कृत को अच्छी तरह से सीखने का आग्रह किया।

श्री नारायण गुरु को भारत के उल्लेखनीय समाज सुधारकों में से एक के रूप में जाना जाता है, मलयालम, संस्कृत और तमिल में उनके 30 ग्रन्थों के साथ-साथ तीन अनूदित कार्य उल्लेखनीय हैं।

श्री नारायण गुरु की मृत्यु

श्री नारायण गुरु, जिन्हें भारत में सामाजिक सुधार के अग्रदूतों में से एक के रूप में जाना जाता था, ने आध्यात्मिकता में कई नवाचार किए और एक महान साहित्यिक रचनाकार और एक महान दार्शनिक थे जिनका सितंबर 1928 में उनके शिवगिरी मठ में खराब स्वास्थ्य के कारण निधन हो गया। उसी वर्ष 20 सितंबर को महासमाधि में उनका निधन हो गया। आएगा।

One Caste, One Religion and One God for human beings was the basic idea of Sri Narayana Guru. He believed that education is the only path to achieve this.

मैंने तो हिंदी सीखी.....

श्री आर.नारायणन
वरिष्ठ मंडल इंजीनियर/सम. &
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/मद्रै

मेरी मातृभाषा हिंदी नहीं है लेकिन दूसरी भाषाएँ सीखने की इच्छा कभी कम न हुई। मेरी जवानी में तमिलनाडु में हिंदी विरोध चरमसीमा पर था और उसका प्रभाव विरले ही किसी पर न पडा होगा। मैं भी कोई अपवाद नहीं। अनुशासन पर अधिक ध्यान देनेवाला व्यक्ति हूँ। जो किया जाना है उसे तो करना ही है।

संयोगवश मेरी नियुक्ति केंद्र सरकार में हुई। सरकार की नीति है कि केंद्र सरकार के कर्मचारियों को हिंदी सीखनी है और हिंदी में काम करना है। महात्मा गांधी जैसे महान नेताओं ने इसकी संकल्पना की थी। मुझे भी हिंदी सीखने का मौका मिला और केंद्र सरकारी कार्यालयों में होने के कारण मेरे लिए अनिवार्य भी था। यह बात माननी पड़ेगी कि लगभग सभी हिंदी अध्यापक या अध्यापिकाएँ बहुत अच्छी तरह, लगन से हिंदी सिखाते थे। सभी कर्मचारियों को आकर्षित करते थे और एक बार विद्यार्थी अंदर आ गया तो अपना सारा कोर्स पूरे किये बिना बाहर नहीं जा सकता था। मेरे टीचर भी बहुत प्रतिभाशाली थे। सर्वगुण संपन्न भी कहा जा सकता है। हिंदी कठिन सा लगा पर उनका क्लास से छूकने को मन नहीं था। इसलिए हम सभी नियमित रूप से उपस्थित हुए। हिंदी के अलावा बहुत सारी बातें सीखीं। लेकिन परीक्षा के नाम सुनते ही बच्चों की तरह ही डरते थे या कम से कम डरता था। पर टीचर इतना धीरज दिया कि परीक्षा में उपस्थित हुआ। पहली परीक्षा में देखकर लिखने, लिप्यंतरण करने आदि-आदि के लिए अंक थे। इसलिए आसानी से पास ही नहीं अच्छा अंक भी ले लिया।

अब मुझे दूसरे और तीसरे यानी प्रवीण एवं प्राज्ञ के लिए तो पूछे तक नहीं, नामित कर दिया। टीचर के कारण मैं भी गया। फिर परीक्षा की वही कहानी। टीचर का वही प्रोत्साहन। वैसे ही अच्छे अंक लेकर पास भी हो गया था।

फिर तो हिंदी पढ़ने या बात करने के लिए मौका न मिला। सरकारी कार्यालयों में विशेषतः उच्च स्तर पर अंग्रेजी में काम चल जाता था। जब मद्रै के राजभाषा अधिकारी ने बहुत जोर दिया तो यह लेख लिख रहा हूँ। जब भी कुछ शब्दों का या भावों का संदेह है तो बाबा गुरु गूगल से पूछ लेता हूँ।

आजकल भाषा की कोई समस्या ही नहीं। किसी भी भाषा में, किसी भी लिपि में अपनी बात बताने का, लिखने का साधन आ गया है। बोलने से साधन स्वयं लिख लेता है। बताने पर साधन स्वयं उसे सही कर लेता है। यदि विशेष उक्ति है तो उसका भी सम तुल्य उक्ति चाहत की भाषा में साधन ढूँढ लेता है।

हिंदी फिल्म हिंदी सीखने में, सिखाने में बहुत काम आया है। अनायास ही कई शब्द दर्शकों के मन में जम जाता है। मैंने तो देखा कि तमिल और कोर्ट की भाषा के कई शब्द समान हैं! पता नहीं क्यों ऐसा है! जैसे वकील, वकालत, दस्तावेज, करार, वायदा, वाद-विवाद, तर्क, निर्णय, पक्षपात, जमानत आदि आदि।

ई-ऑफिस आने के बाद हाथ से लिखने का तो काम नहीं। मानक नोटिंग एवं पृष्ठांकन सभी पहले से बना हुआ तैयार है। अंग्रेजी-हिंदी द्विभाषी है। जो केवल अंग्रेजी जानता है वह भी आजकल द्विभाषी में अपना पृष्ठांकन एवं नोटिंग करा सकता है। इतना ही नहीं यदि नियमित रूप में कोई नोटिंग या पृष्ठांकन हम करते हैं तो उसे यूसर डिफेंस में एक बार द्विभाषी रूप में बनाकर रख देंगे तो हमेशा काम आएगा।

"ज्ञान वो सबसे शक्तिशाली हथियार है जिससे आप पूरी दुनिया बदल सकते हैं।" ~नेल्सन मंडेला
"Knowledge is the most powerful weapon which you can use to change the world." ~ Nelson
Mandela

कर्म तेरे अच्छे हैं तो किस्मत तेरी दासी है,
नीयत तेरी अच्छी है तो घर में मथुरा काशी है।

हिंदी में काम करने के लिए बहुत सारे पुरस्कार हैं। हिंदी में काम करनेवाले सभी को मेरे ख्याल से पुरस्कार दिया जाता है। एक ओर इसे देश की सेवा माना जाता है और दूसरी ओर पुरस्कार मिलता है। तीसरी फायदा यह भी है कि धीरे-धीरे से ही सही प्रयोग करते रहने से एक और भाषा भी सीख लेंगे। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि केंद्र सरकार की कर्मचारी होने के कारण हिंदी में काम करना हमारा कर्तव्य भी है।

मदुरै मंडल के सभी कर्मचारियों से, सभी केंद्र सरकार के कर्मचारी पाठकों से मैं आग्रह करूँगा कि हिंदी में अवश्य काम करें। उसका फल तुरंत हमारे लिए नहीं दिखता इसका मतलब यह नहीं कि फल ही नहीं है। संस्कृत में एक उक्ति है

त्यजेदेकं कुलस्यार्थं ग्रामस्यार्थं कुलं त्यजेत् ।

ग्रामं जनपदस्यार्थं आत्मार्यं पृथिवीं त्यजेत् ॥

भले ही हिंदी में काम करने में कष्ट हो, फल तत्काल न दिखता हो, फिर भी उज्ज्वल भविष्य के लिए हम हिंदी में काम करेंगे। एक महात्मा गांधी या नेहरू का ही नाम उज्ज्वल हुआ न कि उसके पीछे रहे लाखों लोगों का नाम। लेकिन उन लाखों के बिना सफलता न मिली होगी। सहर्ष वे लोग बिना कोई अपेक्षा किए वे लोग समर्पण भाव से काम किये थे। हम भी ऐसे करेंगे। देश को आगे बढ़ाएँगे।

दुल्हन

आती है जहाँ
अपने दाहिने पाँव रखकर
वहाँ रौशनी फैलाती है ।

करती है काम मुस्कुराते हुए
अपनी सास-ससुर से
नाम कमाती है ।

रहती है खड़ी हुई
दरवाजे के पीछे
मैं पास आता हूँ तो
घूँघट सजा लेती है ।

जब भी मैं बोलने लगता हूँ
नैनो के इशारे
टाल देती है ।

शर्म से झुकी आँखें
जमीन में रंगोली करते पाँव
मेरे समीप आने का नतीजा है ।

सुंदरता की प्रतिमा है वह
जब मेरे सामने खड़े देखता हूँ
मेरा हृदय मोह लेती है ।

Smt.B.Saisundari

W/O Shri Narayanan.R

Sr.DEN/Co./MDU

कबीर के दोहे

SHRI R.NARAYANAN
SR.DEN/CO.&DY.CRA/MDU

1) अति का भला न बोलना अति की भली न चूप ।

अति का भला न बरसना अति की भली न धूप ॥

தமிழ் விளக்கம்..

அதிகம் பேசுதல் அழகல்ல ;அதீத
மௌனமும் அவ்விதமே!அதிக மழையும்
நலனல்ல ;அதீத வெயிலும் அவ்வண்ணமே!

2) पोथी पढि पढि जग मुआ पंडित भया न कोय ।

ढाई अक्षर प्रेम का पडे सो पंडित होय ॥

தமிழ் விளக்கம்..

பெரும் பெரும் இலக்கியம் படிப்பதனால்

எவரும் பண்டிதர் ஆவதில்லை!

அன்பெனும் மொழியை அறிந்தவரே நல்

அறிஞரென்று அறிவீரே!

3) बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोई ।

जो दिल दूँदा आपना मुझसा बुरा न कोई ॥

தமிழ் விளக்கம்

தீயவர் எவரெனத் தேடியலைந்தேன் தீயவர்

என்றே எவருமில்லை! எந்தன் உள்ளே

தேடியுணர்ந்தேன் என்னினும் தீயவர்

எவருமில்லை!

4) जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ।

मैं बपुरा बूडन डरा रहा किनारे बैठ ॥

தமிழ் விளக்கம்.

தேடல் எத்தனை ஆழமோ பலனும் அதற்கு

ஒப்பவேயாம்.நீந்தத் தயங்கி கரை

அமர்ந்தால் முத்துக் குளித்தல் சாத்தியமோ?

Smt.B.Saisundari

W/O Shri Narayanan.R Sr.DEN/Co./MDU

जब हिंदी सीख ही रहा था (अब भी सीख रहा हूँ, वह तो दूसरी बात है) तब मेरे गुरुजी डॉ. विष्णुप्रिया जी ने प्राथमिक बच्चों के लिए वर्ग लेने के लिए कहा। जब भी कुछ गलत अर्थ बताता हूँ तो तत्काल उनका Comment होगा – “चीन....you are spreading your ignorance well” । जब भी ऐसी बात सुनता हूँ तत्काल उसका सही अर्थ जान लेता हूँ। सुनी हुई बात है कि मछलियाँ अंडा देने के बाद आँख से देखकर ही हैच कर लेती हैं। और आगे यह भी सुना है कि यदि मछली को दूर कहीं पर छोड़ दें तो भी अंडे की याद करती हैं और अंडा हैच करती हैं। मैंने यह भी सुना कि **मदुरै मीनाक्षी** जी का नाम इसलिए कि उसकी कृपा दृष्टि कहीं पर पड़े तो वे धन्य हो जाएँगे और यदि वह याद कर लेती हैं तो सब स्वस्थ हो जाएँगे। इसे सुनकर, मैं कई जगहों पर कइयों को इसे सुनाया।

एक बार मंडपम रेलवे स्टेशन एवं रामेश्वरम रेलवे स्टेशन जाने का मौका मिला। मंडपम में काम जल्दी खतम हो गया। रामेश्वरम जाने के लिए अगली गाडी आने में दो-तीन घंटा लगेगा। तब मैंने सोचा कि क्यों न पास के फिशरीस कार्यालय न जाऊँ ? गया। संयोगवश वहाँ मेरे जान-पहचान के अधिकारी एवं वैज्ञानिक जॉनसन जी एवं प्रधान तमिलमणी थे। हिंदी अधिकारी प्रिया जी थीं जो मुझे संसदीय समिति के कारण पहचान चुकी हैं। उन तीनों ने सहर्ष समुद्री जीव-जंतु के विशेषज्ञ श्री राममूर्ति से बताया कि इन्हें फिशरीस के अजयाबघर, चिडियाघर एवं समुद्र में लैव मछली दिखाइये। गया तो.....गया। दंग रह गया।

उन्होंने तो कम से कम दस हज़ार प्रकार की मछलियों को अजयाबघर में दिखाया और बताया कि वह तीस साल से मछलियों के शोध करता है और दुख के साथ बताया कि दुनिया अब तक एक शतांश का भी आविष्कार नहीं किया है। उन्होंने बताया कि प्रायः पुरुष मछली स्त्री मछली से आकार में छोटा होगा। स्त्री मछली पहले अंडा देता जाएगा और पुरुष मछली उसके ऊपर अपना सार डालता जाएगा। तब 24 से 48 घंटों में मछलियाँ अंडे से बाहर आ जाएंगी। आश्चर्य जनक बात यह है कि कुछ मछलियाँ तीन लाख अंडे तक देती हैं। उनका यह भी कहना है कि उन तीन लाख में तीस हज़ार बच जाए तो बड़ी बात है। यह भी बताया कि यदि पांच-छः मछलियाँ ही उस टैंक में हैं और दो मछलियाँ जोड़ी बन जाती हैं यानी एक स्त्री और एक पुरुष मछली जोड़ी बन जाती हैं तो बाकी मछलियों को उस टैंक से निकाल देंगे। नहीं तो वे दो मछलियाँ बाकी मछलियों को मार देगी। इसी तरह अंडा देते ही और पुरुष मछली उस हैच करने का काम करते ही दोनों मछलियों को उस टैंक से निकाल देंगे, नहीं तो वे दोनों ही अधिकांश मछलियों को खाएगी। मछली पालन भी इतना आसान काम नहीं है। उसे देखते रहना पड़ेगा। कुछ मछलियाँ तो अपने मुँह में ही अंडा रखेगा। समय आने पर ही नीचे डालेगा। उन्होंने यह भी बताया कि एक विशेष मछली है वह स्थान को साफ करता रहेगा। यह संकेत है कि वहाँ पर अंडा डालेगा। सैकड़ों में, हज़ारों में, लाखों में अंडा देता है तो अंडे की आकार की कल्पना आप कर सकते हैं। लेकिन बड़े-बड़े अंडे डालनेवाले समुद्र जीव भी हैं।

केकडे और कछुए के प्रकार भी कुछ कम नहीं। विभिन्न आकार के, प्रकार के सैकड़ों केकडे कछुए उन्होंने दिखाया।

**“Sharing the fun of fishing turns strangers
into friends in a few hours.”**

हिंदी आसान है उसका प्रयोग जरूर रोज करेंगे।

समुद्र-सुन्दरी (कडल-कब्बी) के रूप में माने जानेवाले समुद्र-पशु नामक मछली को दिखाया। यदि वह खड़ी होती है तो स्त्री के रूप में ही है। स्तनपान वंश में एक है। गाय की तरह ही अपने बच्चों को?? एक साल तक दूध देता और तीन साल तक सुरक्षित रखता है। उसके प्रत्येक अंग की कीमत लाखों से बता रहे थे।

शार्क, व्हेल, ईल, समुद्र सांप, घोंघा, झींग मछली आदि कई प्रकार के हैं। प्रत्येक में कई प्रकार हैं।

1. बटर फिश (Butter Fish) - यह मछली आमतौर पर बंगाल इलाके में बड़े चाव से खायी जाती है। बटरफिश प्रोटीन से भरपूर है।
2. रोहू मछली (Carp) - यह ताजे पानी की मछली है। मछली पालन में रोहू बहुतायत से उपयोग की जाती है।
3. कतला (Indian Carp) - इस मछली का पालन भी बहुतायत से किया जाता है।
4. कैटफिश (Catfish) - यह मछली भी मीठे और साफ पानी में मिलती है।
5. सुरमई मछली (Bluefish) - सुरमई मछली भी प्रोटीन से भरी होती है। यह भी मीठे पानी की मछली है।
6. मून फिश (Moon Fish) - यह मछली चांद की तरह दिखती है और इसका आकार भी चन्द्रमा की तरह है।
7. दूध मछली (Milk Fish) - मिल्क फिश दूध की तरह सफेद है।
8. टूना फिश (Tuna Fish) - टूना मछली खारे पानी की है। इनका मांस लाल गुलाबी होता है। कुछ प्रजाति की टूना की आंखें बड़ी होती हैं।
9. गोल्ड फिश (Gold Fish) - इस मछली का रंग सुनहरा पीला है। यह ताजे पानी की मछली है। यह एक पालतू मछली है।
10. सोल फिश (Sole Fish) - यह भी खारे पानी की मछली है।
11. जेंडर मछली (Zander Fish) - जेंडर मछली मीठे पानी की मछली है।
12. शार्क (Shark) - शार्क को समुद्र का दैत्य भी कहते हैं।
13. झींगा (Prawns) - झींगा मछली को खाया भी जाता है।
14. तिलपिया मछली (Tilapia Fish) - यह कैटफिश प्रजाति की ही मछली है। इस मछली का पालन बहुतायत में किया जाता है।
15. रानी मछली (Pink Perch) - यह पिंक रंग की मछली है। यह आकार में छोटी और ताजे पानी में मिलती है।
16. सालमन मछली (Salmon Fish) - इस मछली को भी खाया जाता है।
17. कॉड फिश (Cod Fish) - यह हल्के हरे रंग की फिश है। इस मछली को बड़े ही चाव से खाया जाता है। कॉड फिश खारे पानी की मछली है।
18. बाम मछली (Eel Fish) - इस मछली में केवल एक कांटा होता है। बाम भी बहुतायत से खायी जाती है।
19. इलेक्ट्रिक कैटफिश (Electric Catfish) - यह मछली बहुत तेज करंट मारती है।
20. पोमफ्रेट मछली (Pomfret) - यह खारे पानी की मछली है। यह ज्यादातर सिल्वर रंग की होती है।
21. रिबन फिश (Ribbon Fish, Beltfish) - रिबन फिश आकार में लम्बी होती है। साँप की तरह लम्बी होती है।
22. सॉ फिश (Saw Fish) इस मछली का मुँह आरी की तरह है। इसके दांत नुकीले होते हैं। इसे कारपेंटर मछली भी कहते हैं।
23. हथौड़ा मछली (Hammer Fish) - इस मछली का मुँह हथौड़े की तरह है। यह शार्क की प्रजाति है।
24. सी बास या मरीन मछली (Sea Bass) - यह एक समुद्री मछली है। इस मछली का शिकार भारी मात्रा में किया जाता है।
25. गप्पी फिश (Guppy Fish) - इस मछली की आकृति इंद्रधनुष की तरह होती है। यह रंग बिरंगी मछली है। गप्पी फिश को पाला भी जाता है।

Give a man a fish and you feed him for a day;
teach a man to fish and you feed him for a lifetime.

हिंदी आसान है शुरू तो करके देखेंगे।

26. व्हेल मछली (Whale) - यह एक मछली ना होकर स्तनधारी प्राणी है।
 27. स्वर्डफिश (Swordfish) - इस मछली की नाक नुकीली और लंबी तलवार जैसी होती है।
 28. स्टोन फिश (Stone Fish) - अगर आप इस मछली को खाने की सोच रहे हैं तो मत खाना। क्योंकि यह एक जहरीली मछली है।
 29. सनफिश (Sunfish) - सन फिश को मोला मछली भी कहते हैं। इनका वजन एक कार का होता है।
 30. टोर फिश महाशीर (Tor Fish) - इस मछली का पालन भी मांस के लिए करते हैं। यह भारत की नदियों में आमतौर पर मिल जाती है।
 31. हिलसा मछली (Hilsa Fish) - बंगाल में यह मछली काफी लोकप्रिय है। यह मीठे पानी की मछली है।
 32. नॉर्थन पाइक (Northern Pike) - यह ठंडे पानी की मछली है।
 33. पिराना मछली (Piranha Fish) - पिराना बहुत खतरनाक मछली है। इस मछली के दांत तीखे और मजबूत होते हैं। यह मांस खाती है।
 34. बाराकूडा मछली (Barracuda) - यह गहरे समुद्र की मछली है।
 35. ऐंगलर फिश (Angler Fish) - इस मछली के सर पर एक लैंप होता है जिससे रोशनी आती है।
 36. ब्लो फिश (Blowfish) - इस मछली को छूने से आप बेहोश हो सकते हैं। इसके शरीर पर कांटे होते हैं।
 37. मडस्कीपर (Mudskipper) - यह मछली पानी के बाहर भी जिंदा रह सकती है। ये कीचड़ में पायी जाती है।
- आदि-आदि अनगिनत प्रकार के हैं। एक मछली दिखाया उसके अंतिम भाग में उर्दू अक्षर थे। उन्होंने कहा कि इसे कुरान मछली बोलते हैं जिसपर कुरान के पहला शब्द है। एक और बात बताया कि ये ही मछली बड़े होते-होते ये अक्षर लुप्त हो जाते हैं। बड़ी मछली को भी दिखाया जिसमें वे उर्दू अक्षर नहीं थे।

समुद्र में उनकी अपनी जगह पर उस मछली संसार को देखने की इच्छा हुई तो एक नाव का प्रबंध किया। मछुआरे ने कहा कि अब समुद्र थोड़ा रफ है, इसलिए अंदर जाना उतना उचित नहीं है। लेकिन इन मछलियों को देखने के बाद मेरी तीव्र इच्छा रही कि मछलियों को उनके अपने महल जैसे समुद्र में देखना है। मैंने कहा कि मुझे जाना ही जाना है। मछुआरे ने कहा - हमें तो कोई आपत्ति नहीं पर आप बहुत डर जाएंगे। मन में सोचा - लगभग साठ का हो रहा हूँ। अब क्या जीवन बच जाएगा? खतरा मोल लेने के लिए तैयार हो गया? पूछे थे कि लाइफ जॉकेट चाहिए? इतना ही उत्तर दिया कि आप तीन मछुआरे मेरे साथ आ रहे हैं.... कुछ होगा तो आप लोग मुझे बचाएंगे ही..। नाव पर चढ़ गया। थोड़ी दूर जाने के पहले ही मुझे तो बहुत डावोडोल लग रहा था। अचानक लगतार बोट तेजी तरंगों के कारण ऊपर उठकर नीचे गिरने लगा। अंदर ही अंदर एक ओर बहुत डर था और दूसरी ओर अपूर्व अनुभव है। तट पर खड़े जॉनसन और तमिलमणी जी बहुत डरने लगे। वापस आने के लिए बहुत चिल्लाये थे। (बाद में ही मुझे यह पता चला क्योंकि समुद्र की आवाज़ के बीच इन लोगों की आवाज़ बिल्कुल शून्य डेसिबल का है) एक बार नाव के अंदर ही गिरा। पूछे थे कि वापस चले जाएँ या और थोड़ी दूर जाने पर समुद्र शांत हो जाएगा, इतनी लहरें नहीं रहेंगे और होने पर भी बहुत ही स्मूथ ही होगा। आगे जाने को कहा तो अद्भुत दुनिया है। राममूर्ति जी मेरे साथ थे। कहने लगे कि मैं खुद डर गया हूँ। ऐसे रफ होने पर प्रायः हम नहीं जाते। पर खुश हो गए कि ऐसे भी एक दर्शक हैं जो अपने शब्दों को ध्यान से सुनकर उससे बहुत ही आकर्षित हुआ है। तब उन्होंने कोरल दिखाया। कोरल मणी या माला देखा हूँ पर इन्होंने बताया कि इसे एक प्रकार की मछली कहा जा सकता है या स्थावर। इसमें प्रायः हजारों जीव रहते हैं। छोटे-छोटे अनगिनत बैक्टीरिया से लेकर बड़ी-बड़ी मछलियों तक का निवासस्थान है। यह मृदा अपरदन को रोकने में अहं भूमिका निभाता है। कोरल के बारे में बहुत कुछ बताया।

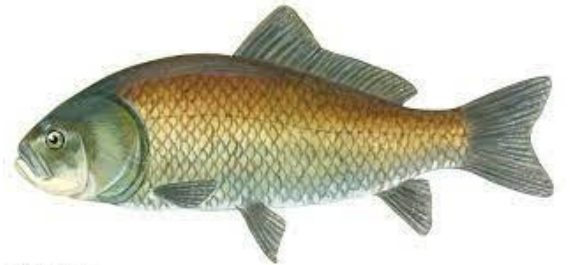
If we wipe out the fish, the oceans are going to die.

If the oceans die, we die. We can't live on this planet with a dead ocean.

देश के हित में हिंदी का प्रयोग करेंगे ।
अंग्रेज़ी सीखा फ्रेंच सीखा, डच सीखा ...हिंदी भी सीखेंगे...

मोति तो मैंने सोचा कि गोलाकार का ही होगा पर इन्होंने असली और नकली याने इन्होंने स्वयं सृजित किये, दोनों मोति देखाया। जो भी बाहरी वस्तु सीप के अंदर जाता है उसी आकार का असली मोती होता है। हज़ारों प्रकार के सीप दिखाया। शंख दिखाया। समुद्र की दुनिया देखकर दंग रह गया। तब मूर्ति जी ने फिर से बताया कि भाई हम तो केवल अभी भी तट के पास ही हैं। समुद्र वास्तव में रत्नाकर है। लाखों दुनिया उसमें है। आज नहीं जीवन भर आप यही रहे तो भी उस बृहद संसार को आप छूने का अनुभव भी नहीं कर पाएँगे। तीस साल दिन-रात इसी पर काम करने के बाद भी मुझे तो ऐसा ही महसूस हो रहा है कि मैं केवल छूने का प्रयास किया हूँ। आइये वापस जाएँगे।

मैं चुप रहा और नाव मुड़ गया। जाते हुए उतना मुश्किल न रहा। मछुआरे ने बताया कि अब तो हम लहरों की दिशा में ही जा रहे हैं इसलिए कुछ दिक्कत नहीं हो रहा है। अचानक मन भारी हो गया। और देखा कि तट पर पानी का रंग बिलकुल बदलकर लाल या हरा सा दीखने लगा। तब उन लोगों ने बताया कि कोई बड़ा जीव या समूह किसी कारणवश मरा होगा। उसका रक्त आदि पानी के ऑक्सीजन को अलग कर देगा। अमोनियम बहुत बड़ जाएगा। इसका मतलब यह है कि कम से कम एक सप्ताह के लिए इस ओर कोई भी समुद्र जीव या मछली नहीं आएगी। मन और भारी हो गया। विष भरे मछली के बारे में भी उन्होंने बताया। तट आ ही गया। मुझे उतरना ही पड़ा। जॉनसन और तमिलमणी जी बहुत डरे हुए थे। बार-बार पूछ रहे थे कि आपको कुछ नहीं हुआ न? स्वस्थ हैं न? हाँ मैं हाँ मिलाया। अप्रत्याशित अनुभव एवं समुद्री दुनिया के प्रथम अक्षर पढ़कर वापस आया।



SHRI A.SRINIVASAN
RAJBHASHA ADHIKARI/MDU

भगवतीचरण वर्मा – एक परिचय

डॉ महेश्वरी रंगनाथन
सेवानिवृत्त वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी,
दक्षिण रेलवे

भगवतीचरण वर्मा (30 अगस्त 1903 - 5 अक्टूबर 1981) हिन्दी साहित्यकार। उन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन 1971 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

भगवती चरण वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के शफीपुर गाँव में हुआ था। वर्माजी ने प्रयागराज से बी.ए., एल.एल.बी. की डिग्री प्राप्त की और प्रारम्भ में कविता लेखन किया। फिर उपन्यासकार के नाते विख्यात हुए। 1933 के करीब प्रतापगढ़ के राजा साहब भदरी के साथ रहे। 1936 के लगभग फिल्म कारपोरेशन, कलकत्ता में कार्य किया। कुछ दिनों 'विचार' नामक साप्ताहिक का प्रकाशन-संपादन, इसके बाद बंबई में फिल्म-कथालेखन तथा दैनिक 'नवजीवन' का सम्पादन, फिर आकाशवाणी के कई केंद्रों में कार्य। बाद में, 1957 से मृत्यु-पर्यंत स्वतंत्र साहित्यकार के रूप में लेखन। 'चित्रलेखा' उपन्यास पर दो बार फिल्म-निर्माण और 'भूले-बिसरे चित्र' साहित्य अकादमी से सम्मानित। पद्मभूषण तथा राज्यसभा की मानद सदस्यता प्राप्त।

भगवती चरण वर्मा और हिन्दी साहित्य

हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल भारत के इतिहास के बदलते हुए स्वरूप से प्रभावित था। स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीयता की भावना का प्रभाव साहित्य में भी आया। भारत में औद्योगीकरण का प्रारंभ होने लगा था। आवागमन के साधनों का विकास हुआ। अंग्रेजी और पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव बढ़ा और जीवन में बदलाव आने लगा। ईश्वर के साथ-साथ मानव को समान महत्त्व दिया गया। भावना के साथ-साथ विचारों को पर्याप्त प्रधानता मिली। पद्य के साथ-साथ गद्य का भी विकास हुआ और छापेखाने के आते ही साहित्य के संसार में एक नई क्रांति हुई। आधुनिक हिन्दी गद्य का विकास केवल हिन्दी भाषी क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं रहा। पूरे देश में और हर प्रदेश में हिन्दी की लोकप्रियता फैली और अनेक अन्य भाषी लेखकों ने हिन्दी में साहित्य रचना करके इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया।

उपन्यास

- पतन (1928),
- चित्रलेखा (1934),
- तीन वर्ष,
- टेढ़े-मेढ़े रास्ते (1946) -
- अपने खिलाँने (1957),
- भूले-बिसरे चित्र (1959),
- वह फिर नहीं आई,
- सामर्थ्य और सीमा
- थके पाँव, (1964)
- रेखा,
- सीधी सच्ची बातें,
- युवराज चूण्डा,
- सबहिं नचावत राम गोसाईं, (1970)
- प्रश्न और मरीचिका,
- धुप्पल,
- चाणक्य
- क्या निराश हुआ जाए

कहानी-संग्रह

- दो बाँके 1936, मोर्चाबंदी, इंस्टालमेंट, मुगलों ने सलतलत बख्श दी

कविता-संग्रह

- मधुकण (1932), 'प्रेम-संगीत' और 'मानव' निकले।

नाटक

- वसीहत
- रुपया तुम्हें खा गया
- सबसे बड़ा आदमी

संस्मरण

- अतीत के गर्भ से

साहित्यालोचन

- साहित्य के सिद्धान्त रु

“लिखते तो वह लोग हैं जिनके अंदर दर्द है,
अनुराग है, लगन है, विचार है।

कोई भी भाषा उत्तम नहीं या नीच नहीं... संप्रेषण का माध्यम है...

मिश्रित भाषा भी चलेगी यदि सही संप्रेषण हो जाता है...

साहित्य समाज का दर्पण है। दर्पण केवल सत्य को ही प्रकट करता है। वर्तमान को प्रतिबिंबित करता है। उस दर्पण को श्री भगवतीचरण वर्मा जी की लेखनी ने ऐसा परिवर्तित कर दिया कि भूत, वर्तमान एवं भविष्य को वह दिखा सके। वर्मा जी की रचनाएँ कालातीत हैं। मूलतः मनुष्य के भावों से जुड़े रहने के कारण ever green हैं। कविता क्षेत्र में पधारे वर्मा जी हिंदी उपन्यास क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ कर गए हैं। लगता है कि अपने समय में मध्य वर्गीय परिवार के सुख-दुख, उतार-चढ़ाव, निर्णय लेने में पसोपेश, उच्च वर्ग में पहुँच जाने पर होनेवाले मनोभाव आदि को ऐसा चित्रण किया है कि पाठक सभी अपनी ही कहानी, अपनी ही स्थिति समझने लगे।

भगवतीचरण वर्मा हिन्दी जगत के जाने माने विख्यात उपन्यासकार हैं। आपके सभी उपन्यासों में एक विविधता है। हास्य व्यंग्य, समाज, मनोविज्ञान और दर्शन सभी विषयों पर उपन्यास लिखे हैं। कवि और कथाकार होने के कारण वर्माजी के उपन्यासों में भावनात्मक और बौद्धिकता का सामंजस्य मिलता है। वर्माजी के उपन्यासों को पढ़ते समय यह सदा ध्यान रखना चाहिये कि वे मूलतः एक छायावादी और प्रगतिवादी कवि हैं।

एक खूबसूरत सोच

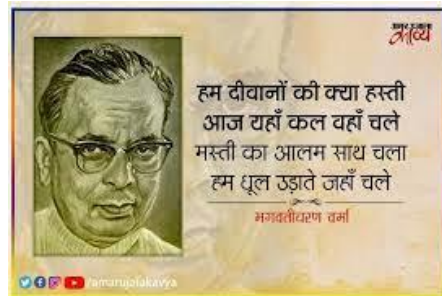
अगर कोई पूछे जिंदगी में क्या खोया और क्या पाया,
तो कहना जो कुछ खोया वो मेरी नादानी थी और
जो भी पाया वो प्रभ की मेहेरबानी थी,
खुबसूरत रिश्ता है मेरा और भगवान के बीच में,
ज्यादा में मांगता नहीं और कम वो देता नहीं ?

इसी प्रकार पाठकों को अपने चरित्रों द्वारा भगवान की तरह भगवतीचरण वर्मा जी सही समय पर आवश्यक विचारों को आवश्यकतानुसार प्रदान करते हैं।

भूले बिसरे चित्र

भूले-बिसरे चित्र मूलतः एक महाकाव्य उपन्यास है। संयुक्त परिवार-प्रथा का विघटन, मध्यवर्ग के उदय, सामंजस्यवाद की पूँजी द्वारा पराजय तथा राष्ट्रीय स्वातंत्र्य-आंदोलन का विकास ये चार आधार बिन्दु हैं, जिस पर इस उपन्यास का कथानक खड़ा होता है। कथाकाल सन् 1880 से 1930 तक फैला हुआ है। इसे एक प्रकार का 'पीरियड नावेल' कहा जा सकता है। वस्तुतः इस उपन्यास में जिस अर्द्धशेती के भूले-बिसरे चित्रों को पुनः याद करके अंकित किया गया है, वे अपनी रोचकता में हमें आकर्षित करते हैं।

भगवतीचरण वर्मा के चित्रलेखा उपन्यास को छोड़कर अन्य सभी उपन्यास मध्यवर्ग की किसी न किसी समस्या को प्रस्तुत करते हैं। चित्रलेखा में नैतिक, तीन वर्ष में पारिवारिक, टेढ़े मेढ़े रास्ते में राजनीतिक और आखिरी दांव में आर्थिक धरातल पर व्यक्तिवादी जीवन दर्शन को प्रतिष्ठापित किया है। व्यक्ति स्वातंत्र्य के आदर्श की प्रतिष्ठा करना भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों का मूल उद्देश्य है। मध्यवर्ग की पाप और पुण्य, प्रेम और विवाह, व्यक्ति-स्वातंत्र्य एवं सामाजिक स्वीकृति के अन्तर्गत प्रायः सभी समस्याएँ आ जाती हैं।



जवान दुनिया को बदल देना चाहता है.... वही वृद्ध होकर युवाओं को बदल देना चाहता है

‘पतन’ भगवतीचरण वर्मा का प्रथम उपन्यास है। सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत मध्यवर्ग की प्रेम, विवाह, विवाहोपरान्त स्वच्छन्द प्रेम का वर्णन लेखक का प्रमुख विषय रहा है। “प्रेम अमृत है। प्रेम सांसारिक तूही है, वह देवी होता है....। तृष्णा सांसारिक है, प्रेम देवी है, तृष्णा नशा है।” मध्यवर्ग को वैवाहिक समस्या सुभद्रा और सरस्वती के माध्यम से स्पष्ट की गई है। सुभद्रा का विवाह तत्कालीन बाल-विवाह की प्रथा के अनुरूप बचपन में नहीं हो पाता। सरस्वती के माध्यम से नारी के स्वच्छन्द प्रेम की समस्या का वर्णन हुआ है। भवानीशंकर के मन का अर्न्तद्वन्द्व, कर्तव्य और प्रेम, पत्नी और प्रेयसी, की समस्या को प्रस्तुत करता है। सरस्वती को समझाता है—“मैं समझता हूँ हम दोनों ने बुरा किया है। प्रेम से ऊपर भी कोई वस्तु है, जिसे कर्तव्य कहते हैं - हमने कर्तव्य को भुला दिया।” इस प्रकार सरस्वती के माध्यम से लेखक ने विवाहिता नारी के उन्मुक्त प्रेम की समस्या का वर्णन किया है। उसके चरित्र का पतन परिस्थितिजन्य है और मृत्यु का वर्णन करके ही वह अपने विडम्बनापूर्ण जीवन से मुक्ति प्राप्त करती है। एक मनुष्य चाहे जितना श्रेष्ठ क्यों न हो, यदि निम्न श्रेणी का है, तो समाज में उसका सदा अपमान होगा। मुंशी रामसहाय के माध्यम से मध्यवर्ग की प्रदर्शनप्रियता वर्णित की गई है।

‘तीन वर्ष’ वर्मा जी के उपन्यासों में चित्रलेखा के बाद की रचना है। ‘तीन वर्ष’ में विद्यार्थी रमेश के विश्वविद्यालय के जीवन के तीन वर्षों का वर्णन हुआ है। मध्यवर्ग के माध्यम से गांधीवाद, मार्क्सवाद, लेनिनवाद, पाप-पुण्य की परिभाषा, पूँजी की शक्ति और विवाह तथा प्रेम का विश्लेषण व्यक्तिवादी दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। रमेश निम्न मध्यवर्गीय समाज का व्यक्ति है। अजित और प्रभा उच्चवर्ग से सम्बन्धित हैं तथा सरोज समाज के बहिष्कृत वर्ग (वेश्या वर्ग) से सम्बन्धित नारी है।

मध्यवर्ग की धर्मभीरुता, खोखली मान्यताओं के प्रति आस्था, प्रेम की आदर्शवादी कल्पना, उच्चवर्ग के प्रति निम्नवर्ग की प्रतिक्रिया और भौतिकवादी जीवन के प्रति घृणा आदि समस्याएँ रमेश के माध्यम से व्यक्त की गई हैं। रमेश अजित से अपनी धर्मभीरुता का परिचय देता हुआ कहता है - “आपने मुझे अण्डा खिलाकर मेरा धर्म ले लिया। तुम्हें प्रेम की पवित्रता पर विश्वास नहीं, पर मैं तो प्रेम की पवित्रता पर विश्वास करता हूँ।

‘टेढ़े मेढ़े रास्ते’ उपन्यास में सन् १९३० के आसपास की राजनीतिक हलचलों का विस्तार से विवेचन हुआ है। मध्यवर्ग के अध्ययन की दृष्टि से ‘टेढ़े मेढ़े रास्ते’ की प्रमुख कथावस्तु महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि उपन्यास के प्रमुख पात्र रामनाथ तिवारी, श्यामनाथ, दयानाथ, उमानाथ, प्रभानाथ, राजेश्वरी तथा महालक्ष्मी सभी उच्चवर्ग से सम्बन्धित हैं। टेढ़े मेढ़े रास्ते के गाँव पात्र मध्यवर्ग से सम्बन्ध रखते हैं। इन पात्रों में झगड़ू, मिश्र, मार्कण्डेय, विश्वम्भर, मनमोहन, ब्रह्मदत्त, डा० भास्कर, वीणा तथा प्रतिभा हैं जिनके माध्यम से मध्यवर्ग की राजनीतिक चेतना, सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक विषमताएँ चित्रित की गई हैं। वीणा, प्रतिभा, मनमोहन प्रमुख क्रान्तिकारी पात्र हैं जो भारत की स्वतन्त्रता को हिंसा तथा क्रान्ति के मार्ग से प्राप्त करना चाहते हैं। हिला और बल के सहारे से ही धनी व्यापारियों के घर पर क्रान्तिकारी दल डाका डालता है, द्रेन लूटता है पर अन्त में पराजित सा अनुभव करता है। वह प्रभानाथ से कहता है - “तुम मुझे वचन दो कि तुम इस क्रान्ति के मार्ग से हट जाओगे - मैं मर रहा हूँ प्रभा और मैं कहता हूँ, अपने सारे अनुभवों को लेकर कहता हूँ कि यह मार्ग गलत है। मध्यवर्गीय शिक्षिता नारी कितनी साहसी और कर्मठ हो सकती है, इसका उदाहरण प्रतिभा और वीणा हैं। मध्यवर्ग की राजनीतिक विचारधारा को प्रभावित करने वाला दूसरा सिद्धान्त मार्क्सवाद का है। विश्वम्भर मार्क्सवाद के सिद्धान्तों का पोषक है।

**काम ऐसा करो की नाम हो जाए !
या फिर नाम ऐसा करो कि सुनते ही काम हो जाए ।**

‘टेढ़े मेढ़े रास्ते’ में मध्यवर्ग की गान्धीवादी चेतना और गान्धी की अहिंसात्मक नीति के समर्थक झगड़ू मिश्र तथा मार्कण्डेय हैं। झगड़ू मिश्र का यह बलिदान मध्यवर्ग की महात्मा गान्धी की अहिंसात्मक नीति में अटूट आस्था का प्रतीक है। झगड़ू मिश्र के अतिरिक्त दूसरा गान्धीवादी पात्र मार्कण्डेय है जो अहिंसा में अटूट विश्वास रखता है - "अहिंसा की प्रतिक्रिया अहिंसा ही हो सकती है और इसलिए अहिंसा कभी भी नष्ट नहीं हो सकती। निम्न मध्यवर्ग से सम्बन्धित वीणा क्रान्तिकारी दल की सदस्या है और वह प्रभानाथ से प्रेम करती है। वीणा का प्रेम वासनात्मक प्रेम न होकर बलिदान की भावना से अनुप्राणित भारतीय नारी का प्रेम है जिसमें वह मध्यवर्ग की आर्थिक विषमताओं का विवेचन टेढ़े मेढ़े रास्ते में अधिक नहीं है। विश्व क्रान्ति करके वह पूँजीपतियों को पराजित करना चाहता है। इस प्रकार ‘टेढ़े मेढ़े रास्ते’ में मध्यवर्ग की बहुत कम समस्याएँ विकास पा सकी हैं क्योंकि इस उपन्यास का सम्बन्ध विशेष रूप से सामन्तवादी उच्च वर्ग (जमींदार वर्ग) से है जिसके अधिकांश पात्र आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न हैं।

वर्माजी के ‘आखिरी दांव’ उपन्यास की कथा उत्तरप्रदेश के गाँव के जीवन से प्रारम्भ होती हुई बम्बई जैसे विशाल नगर में समाप्त होती है। मध्यवर्ग की दृष्टि से ‘आखिरी दांव’ में रामेश्वर, चमेली, राधा, जगमोहन तथा किशोर आदि पात्र हैं जिनके माध्यम से उपन्यास की कथावस्तु का ताना-बाना बुना गया है। मध्यवर्गीय समस्याओं की दृष्टि से वर्माजी ने आखिरी दांव उपन्यास में भारतीय मध्यवर्गीय हिन्दू परिवार में नारी की समस्या को विस्तार से चित्रित करने का प्रयत्न किया है। चमेली एक ऐसे मध्यवर्गीय परिवार की प्रतिनिधि पात्र है जो अशिक्षित है और पति तथा अपने परिवार के अन्य स्वजनों की उपेक्षा का शिकार इसलिए बनती है कि वह बांझ है। इस बांझ होने की समस्या से नारी को परिवार में कितना अपमानित होना पड़ता था इसी का चमेली जीता-जागता उदाहरण है।

‘वह फिर नहीं आई’ उपन्यास में नारी जीवन के अन्तरंग और बहिरंग पक्षों के उद्घाटन के साथ ही नारी के सम्बन्ध में प्रेम और पाप की समस्या को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में रानी श्यामला, जीवनराम और ज्ञानचन्द्र तीन प्रमुख पात्र हैं। रानी श्यामला और जीवनराम उच्चवर्ग के पात्र हैं जो देश के विभाजन के परिणामस्वरूप विस्थापित बन अपना समस्त वैभव खो बैठते हैं। इस उपन्यास में मध्यवर्ग से सम्बन्धित पात्र केवल ज्ञानचन्द्र है जिसके माध्यम से वर्माजी ने मध्यवर्ग की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का वर्णन किया है।

‘थके पांव’ वर्माजी के उपन्यासों की श्रृंखला में मध्यवर्गीय (निम्न मध्यवर्गीय) जीवन की यथार्थ झाँकी प्रस्तुत करने वाला उपन्यास है। साधारण मध्यवर्गीय परिवार का केशव, उपन्यास का नायक है जिसके चारों ओर घटनाएँ गतिशील हैं। पहली है केशव के पिता की पीढ़ी की कहानी, दूसरी केशव के जीवन की कहानी और तीसरी देश के पुत्रों के माध्यम से बदलती हुई मान्यताओं वाली भावी पीढ़ी की कहानी। इस प्रकार केशव का प्रारम्भिक रूप मध्यवर्गीय क्लर्क परिवार के उस नवयुवक का रूप है जो अपने परिवार के अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक शिक्षा प्राप्त कर लेने पर सुखमय भावी जीवन की कल्पनाएँ मन में सँजोता है।

‘रेखा’ का कथानक नारी सम्बन्धी स्वच्छंद रोमांस पर आधारित है। इस उपन्यास की रेखा भारद्वाज एक ऐसी नारी है जो अपनी भावुकता और असंतुष्ट कामवासना के कारण नारी-जीवन के घिनौने चित्र प्रस्तुत करती है। मध्यवर्ग की प्रेम-समस्या, देवकीराम, ज्ञानवती और योगेन्द्र मिश्र तीनों पात्रों के माध्यम से व्यक्त हुई है। प्रेमचंद के बाद के सशक्त लेखक हैं। पाठकों को केवल परिचय मँने दिया। आशा है कि इससे प्रेरित होकर उनके सारे साहित्य पढ़ेंगे।

**DR.Maheswari Ranganathan
Retd. Sr.Rajbhasha Adhikari, Southern Railway**

जिन्दगी एक सफरनामा है। इस सफरनामे में लोग, जगह-जगह विभिन्न तरीके से यात्रा करते हैं। यह यात्रा लोग पढाई करने के लिए, रोजगार के लिए, व्यापार के लिए या फिर पर्यटन के लिए करते हैं। यह यात्रा एक शहर से दूसरे शहर, एक गांव से दूसरे गांव या फिर एक गांव से दूसरे शहर का हो सकता है। इस यात्रा को लोग अपनी मोटर साइकिल, मोटर गाड़ी, बस, रेल, जहाज या विमान से करते हैं। यात्रा के इन सभी सौजन्यों में रेल से यात्रा करना छोटे और बड़े, सभी को पसंद है। रेल का सफर हमेशा सुखद और स्मरणीय होता है। ऐसी ही एक स्मरणीय रेल यात्रा के अनुभव को मैं आप लोगों से साझा करना चाहता हूँ।

मैं अपने परिवार जन और मेरी दादी के साथ एक बार उडिसा से रामेश्वरम जा रहा था। मैं और मेरे छोटे भाई और बहन सभी तिरुनेलवेली के स्टेशन पर बहुत उत्सुकता के साथ रेल गाड़ी का इंतज़ार कर रहे थे। हम वातानुकूल शयनयान से यात्रा करने वाले थे। दक्षिण भारत में रेल गाड़ियों की रखरखाव बहुत अच्छी होती है। रेल गाड़ियाँ साफ़ सुथरी होती हैं और समय से चलती हैं। स्टेशन परिसर और ड्यूटी में सभी कर्मचारी पक्के होते हैं। इस तरीके की यात्रा के लिए हम बहुत तरस्ते थे क्योंकि हम उस समय उड़ीसा में रहते थे।

रेलगाड़ी अपने निर्धारित समय पर पहुंच गई और हम सपरिवार अपने सीट पर पहुंच गये। अब बच्चों में होड लग गई कि कौन खिड़की के पास बैठेगा। माँ के समझाने के पश्चात बारी-बारी से खिड़की के पास बैठने की सहमति बनी। रेल गाड़ी स्टेशन से निकल पड़ी और हम खिड़की से बाहर देखने लगे और आपस में कई बातें करतें। गाड़ी ने तेजी पकड़ ली और खेत खलिहानों, नदी-नालों, पुलों, पहाड़ियों से होते हुए अपनी मंजिल की तरफ बढ़ती जा रही थी। इस यात्रा का भरपूर मजा हम ले रहे थे और वहीं हमारे माता, पिता और दादी आपस में बातें कर रहे थे। टीटीई आ कर टिकट चेक की और चले गये।



लोग कहते हैं पैसा रखो,
बुरे वक्त में काम आएगा,
हम कहते हैं अच्छे लोगों के साथ रहो,
बुरा वक्त ही नहीं आएगा।



कुछ समय बाद दरवाजे पर आवाज आई। पिताजी ने दरवाजा खोला और कैंटरिंगवाले ने रात के खाने का आर्डर लिया। हम सब में होड़ लगी कि आर्डर में क्या चाहिए और कौन पहले आर्डर देगा। इसे देखकर, पिताजी ने सबको चुप कराया और सब के लिए खाने का आर्डर दिया। खाना आने में समय लग रहा था और हमें भूख लगने लगा। माँ ने सभी को मीठा और खारा खाने को दिया। हम खाते-खाते आपस में स्कूल में पढ़ी कहानियों को सुना रहे थे। समय बीतता गया और हम मंदुरें पहुँच गये, जहाँ हमें खाना परोसा गया। रेल गाड़ी की तरह खाना भी अच्छा था।

खाने के बाद, पिताजी ने सब से जल्दी सो जाने को कहा ताकि अच्छी नींद हो जाए और रामेश्वरम् की सैर खूब कर पाएं। मुझे निंद नहीं आ रही थी, मैं लेटे-लेटे खिड़की से बाहर देख रहा था। रेल गाड़ी हिलते डोलते सिंटी बजाते तेज गति से चले जा रही थी। मैं डोलते हुए और मजे लेते हुए सो गया।

भोर हो गया और एक सुखद यात्रा का अंत होने का था। सब को जगाया गया, परंतु जब दादी को जगाने की बारी आई तो दादी नहीं थी। हम सब को आश्चर्य हुआ कि दादी कहाँ गई। माँ और पिताजी उसे ढूँढने लगे। दादी को डिब्बे में सब जगह ढूँढा, पर वह कहीं न मिली। हम सभी को उसकी चिंता होने लगी। पिताजी ने कहा कि वह रात को हमारे बीच ही थी फिर कहाँ गई। एकाएक हम अपनी सीट के नीचे सामान निकालने को झुके और देखकर कर अचरज में पड़ गये। दादी सिकुड़कर सीट के नीचे सोई हुई थी। हम सबको राहत मिली और दादी को जगाया गया। जागने पर दादी बोली, रात को ठंड खूब हुई और मैं सो न पाई। इसी कारण मैंने सीट के नीचे जा कर सोने का सोचा और मैं वहाँ अच्छे से सो गई। मैं अब बिलकुल रामेश्वरम् घूमने को तैयार हूँ। दादी के इस बात को सुन कर हम सबको हँसी आ गई परंतु दादी को हमारे हँसने का कारण समझ में न आया।

रेल गाड़ी रामेश्वरम् पहुँच गई और रेल से उतरने के बाद, रेल को देखते देखते अपने परिवार के साथ मैं स्टेशन से बाहर चला गया। एक मजेदार और खूबसूरत यात्रा का अंत हुआ। अब हमारा अगली यात्रा छोड़े गाड़ी से शुरू होना था और हमें अपने होटल को पहुँचना था।

हम सब यात्रा करते रहते हैं पर रेल की यात्रा हमेशा यादगार होती है। मैं आज तक इस यात्रा को भूल नहीं पाया हूँ, जिसे दादी ने स्मरणीय बना दिया।

Shri P.SRIRAM
TECHNICIAN/GR.II/SIGNAL, MADURAI DIVISION

देश, नागरिक और विकास

पी.श्रीराम
तकनीशियन/ग्रेड-1
सिग्नल/मदुरै

एक देश को उसके भौतिक विशेषताओं जैसे उस देश की सीमाओं, उससे लगी अन्य देशों की सीमाओं, और अन्य भौतिक विशेषताओं जैसे पहाड़ों, नदियों और समुन्दरों से जाना जाता है। उसे उसके राजनैतिक विशेषताओं से भी जाना जाता है, जैसे उस देश की संस्कृति और सभ्यता, संघ की परिभाषा, उसके केंद्रीय और राज्यों का संचलन इत्यादि। इसके साथ उस देश को उसकी जनसंख्या व उनके जीवन स्तर और कई सारी मापदंडों से भी निर्णय किया जाता है। अतः एक देश और उसके नागरिक ही उस देश के भाग्य का विधाता है जिस किसी देश में उसके नागरिक पूरी तरह से जागरूक, आत्म अनुशासित और देश प्रेम की भावना रखते हैं, वह देश हमेशा विकास के राह पर चलता जाता है और उसके नागरिक खुशहाली में जीवन व्यतीत करते हैं। वह देश दुनिया में अन्य देशों के लिए एक प्रेरणा बन जाता है। इस संदर्भ में, भारत के सभी नागरिकों को भारत की सांस्कृतिक महत्त्व को समझना चाहिए, अपने आप में भारतीय होने पर गर्व होना चाहिए, जाति पंथ, धर्म, लिंग के भेद से ऊपर उठकर कर्मठ बनाना चाहिए और देश के विकास में अपना योगदान देना चाहिए ताकि भारत का हर एक व्यक्ति आय में बढोत्तरी तेजी से हो, जिससे भारत भी विकसित देश की गिनती में आए और देश का हर नागरिक खुशहाली में जिए।

Shri P.SRIRAM
TECHNICIAN/GR.I/SIGNAL, MADURAI DIVISION



ART BY
SHRI V.RADHA
PI/MADURAI DIVISION

चमकता भारत

डॉ पी.गणेशन, एसिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी, श्री कृष्णा आर्ट्स और साइंस कॉलेज, कोयम्बतूर

आ जा मेरे प्यारे,

हमवतन का गीत गायेँगे

उस नित नूतन का

भव्य भारत है नाम उसका

सदा उन्नत करते रहना

काम हमारा, यही नारा सही नारा ॥

लाल, पाल, बाल किन-किनको याद करें

अनगिनत उनके पीछे मरे

शर्मा, वर्मा, गुप्ता, दास किन-किनको याद करें

पुरानी बातें हो मन में, पर सोच यही हमारी हो

देश की उन्नति के लिए मेरा योगदान क्या हो?

प्रथम सीढ़ी अच्छा नागरीक बनूँ

दूसरी, देश के लिए कुछ काम आऊँ

अपने से जितना हो सके कर दिखाऊँ

मेरा, तुम्हारा, पार कर, सब हमारा हो

आज नहीं तो कल जरूर यह स्वप्न साकार हो।

याद करें

विश्व बैंक के लिए हम ऋण दें

विश्व भर की झंडा तिरंगा बनें

आज नहीं तो कल जरूर यह स्वप्न साकार हो।

आत्मनिर्भर, आत्मबल, आत्मविश्वास से भरा भारत

सबका विकास, सबका साथ दिया भारत

सबसे निराला, सदा उजाला, रही मेरी माँ भारत

विश्व का पथ-प्रदर्शक, दिक्-दर्शक होगा भारत

आज नहीं तो कल जरूर यह स्वप्न साकार हो।

स्वच्छता के लिए

विश्व को हम मिसाल रहें

जर्मनी हमारी गाडियों का

आयात करें ।

DR P.GANESAN

Asst. Professor / Hindi

Sri Krishna Arts and Science

College Coimbatore



जीवन का कठोर सत्य

श्रीमती वेणमाल
मुख्य टंकक, मदुरै मंडल

भगवान विष्णु गरुड़ पर बैठ कर कैलाश पर्वत पर गए। द्वार पर गरुड़ को छोड़ कर खुद शिव से मिलने अंदर चले गए। तब कैलाश की अपूर्व प्राकृतिक शोभा को देख कर गरुड़ मंत्रमुग्ध थे कि तभी उनकी नजर एक खूबसूरत छोटी सी चिड़िया पर पड़ी। चिड़िया कुछ इतनी सुंदर थी कि गरुड़ के सारे विचार उसकी तरफ आकर्षित होने लगे। उसी समय कैलाश पर यम देव पधारे और अंदर जाने से पहले उन्होंने उस छोटे से पक्षी को आश्चर्य की दृष्टि से देखा। गरुड़ समझ गए उस चिड़िया का अंत निकट है और यमदेव कैलाश से निकलते ही उसे अपने साथ यमलोक ले जाएंगे। गरुड़ को दया आ गई। इतनी छोटी और सुंदर चिड़िया को मरता हुआ नहीं देख सकते थे। उसे अपने पंजों में दबाया और कैलाश से हजारों कोश दूर एक जंगल में एक चट्टान के ऊपर छोड़ दिया, और खुद बापस कैलाश पर आ गया। आखिर जब यम बाहर आए तो गरुड़ ने पूछ ही लिया कि उन्होंने उस चिड़िया को इतनी आश्चर्य भरी नजर से क्यों देखा था। यमदेव बोले "गरुड़, जब मैंने उस चिड़िया को देखा तो मुझे ज्ञात हुआ कि वह चिड़िया कुछ ही पल बाद यहाँ से हजारों कोश दूर एक नाग द्वारा खा ली जाएगी। मैं सोच रहा था कि वह इतनी जल्दी इतनी दूर कैसे जाएगी, पर अब जब वह यहाँ नहीं है तो निश्चित ही वह मर चुकी होगी।"

गरुड़ समझ गये "मृत्यु टाले नहीं टलती चाहे कितनी भी चतुराई की जाए।" इस लिए कृष्ण कहते हैं :-

करता तू वह है, जो तू चाहता है
परन्तु होता वह है, जो मैं चाहता हूँ
कर तू वह , जो मैं चाहता हूँ
फिर होगा वह, जो तू चाहेगा ।

जीवन के 6 सत्य:-

1. कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितने खूबसूरत हैं ?
क्योंकि...लँगूर और गोरिल्ला भी अपनी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित कर लेते हैं..
 2. कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपका शरीर कितना विशाल और मज़बूत है ?
क्योंकि...श्मशान तक आप अपने आपको नहीं ले जा सकते....
 3. आप कितने भी लम्बे क्यों न हों , मगर आने वाले कल को आप नहीं देख सकते....
 4. कोई फर्क नहीं पड़ता कि, आपकी त्वचा कितनी गोरी और चमकदार है..
क्योंकि...अँधेरे में रोशनी की जरूरत पड़ती ही है...
 - 5 . कोई फर्क नहीं पड़ता कि " आप " नहीं हँसेंगे तो सभ्य कहलायेंगे ?
क्योंकि ..." आप " पर हँसने के लिए दुनिया खड़ी है ?
 6. कोई फर्क नहीं पड़ता कि, आप कितने अमीर हैं ? और दर्जनों गाड़ियाँ आपके पास हैं ?
क्योंकि...घर के बाथरूम तक आपको चल के ही जाना पड़ेगा...
- इसलिए संभल के चलिए ... जिन्दगी का सफर छोटा है , हँसते-हँसते काटिये, आनंदमय रहिए ।

MS.VENMAL CHIEF TYPIST, MDU

Very interesting legal situation

On March 23, 1994 the medical examiner viewed the body of Ronald Opus and concluded that he died from a shotgun wound to the head.

Mr. Opus had jumped from the top of a ten-story building intending to commit suicide. He left a note to the effect indicating his despondency.

As he fell past the ninth floor his life was interrupted by a shotgun blast passing through a window, which killed him instantly.

Neither the shooter nor the deceased was aware that a safety net had been installed just below the eighth floor level to protect some building workers and that Ronald Opus would not have been able to complete his suicide the way he had planned.

"Ordinarily," Dr Mills continued, "A person, who sets out to commit suicide and ultimately succeeds, even though the mechanism might not be what he intended, is still defined as committing suicide."

That Mr. Opus was shot on the way to certain death, but probably would not have been successful because of the safety net, caused the medical examiner to feel that he had a homicide on his hands.

In the room on the ninth floor, where the shotgun blast emanated, was occupied by an elderly man and his wife. They were arguing vigorously and he was threatening her with a shotgun.

The man was so upset that when he pulled the trigger he completely missed his wife and the pellets went through the window striking Mr. Opus.

When one intends to kill subject "A" but kills subject "B" in the attempt, one is guilty of the murder of subject "B".

When confronted with the murder charge the old man and his wife were both adamant and both said that they thought the shotgun was unloaded.

The old man said it was a long-standing habit to threaten his wife with the unloaded shotgun. He had no intention to murder her. Therefore the killing of Mr. Opus appeared to be an accident; that is, if the gun had been accidentally loaded.

The continuing investigation turned up a witness who saw the old couple's son loading the shotgun about six weeks prior to the fatal accident.

It transpired that the old lady had cut off her son's financial support and the son, knowing the propensity of his father to use the shotgun threateningly, loaded the gun with the expectation that his father would shoot his mother.

Since the loader of the gun was aware of this, he was guilty of the murder even though he didn't actually pull the trigger.

The case now becomes one of murder on the part of the son for the death of Ronald Opus. Now comes the exquisite twist.

Further investigation revealed that the son was, in fact, Ronald Opus.

He had become increasingly despondent over the failure of his attempt to engineer his mother's murder. This led him to jump off the ten-story building, only to be killed by a shotgun blast passing through the ninth story window.

The son had actually murdered himself, so the medical examiner closed the case as a suicide. facts are sometimes stranger than fiction!

MS.VENMAL CHIEF TYPIST, MDU

தமிழ் அறிவோம்

பி.வேன்மாள்,முதன்மை
தட்டாச்சாளர், மதுரை

1. வரப்புயர நீர் உயரும்; நீருயர நெல் உயரும், நெல்லுயரக் குடியுயரும் எனக் கூறியவர்
(A) சேக்கிழார் (B) திருவள்ளுவர்
(C) அவ்வையார் (D) ஞானசம்பந்தர்
2. மன்னனும் மாசறக் கற்றோனும் சீர்தூக்கின் மன்னனின் கற்றோன் சிறப்புடையன் இடம்பெற்ற நூல்
(A) நன்னெறி (B) குறுந்தொகை
(C) மதுரை (D) பழமொழி நானூறு
3. மூத்தோர் கூறும் அறிவுரை என்பதை குறிக்கும் சொல்
(A) மதுரை (B) பழமொழி
(C) அறிவுரை (D) சொலவடை
4. “தம்பிரான் தோழர்” என்னும் சிறப்புப் பெயர் பெற்றவர்
(A) திருஞானசம்பந்தர் (B) திருநாவுக்கரசர்
(C) சுந்தரர் (D) நம்பியாண்டார் நம்பி
5. பழையன கழிதலும் புதியன புகுதலும் எனக் கூறியவர்
(A) திருவள்ளுவர் (B) பாரதியார்
(C) பவணந்திமுனிவர் (D) அவ்வையார்
6. பாண்டியர்களின் இரண்டாவது தலைநகரம்
(A) தென்மதுரை (B) திருநெல்வேலி
(C) கொற்கை (D) பூம்புகார்
7. “வாடிய பயிரைக் கண்டபோதெல்லாம் வாடினேன்” – யாருடைய கூற்று
(A) தாயுமானவர் (B) புத்தர்
(C) வள்ளலார் (D) சுவாமிநாதன்
8. நாலாயிரத் திவ்விய பிரபந்தத்தில் முதல் திருவந்தாதி பாடியவர்
(A) பூதத்தாழ்வார் (B) பொய்கையாழ்வார்
(C) பெரியாழ்வார் (D) பேயாழ்வார்
9. தமிழ்நாடு என்ற சொல் இடம்பெறும் இலக்கிய நூல்
(A) சீவகசிந்தாமணி (B) மணிமேகலை
(C) சிலப்பதிகாரம் (D) தொல்காப்பியம்

தொடர்கிறது

செப்பு மொழி பதினெட்டு உடையாள்
ஆயினும் சிந்தனை ஒன்றுடையாள்

BY BHARATHIYAR

10. “அணுவைத் துளைத்து ஏழ்கடலைப் புகட்டிக் குறுகத் தரிந்த குறள்” – யார் கூறியது
(A) பாரதியார் (B) அப்துல்கலாம்
(C) பாரதிதாசன் (D) அவ்வையார்
11. “தமிழ் மூவாயிரம்” என அழைக்கப்படும் நூல்
(A) திருக்கேதாரம் (B) திருமந்திரம்
(C) பெரியபுராணம் (D) சிலப்பதிகாரம்
12. திருவெம்பாவையை இயற்றியவர்
(A) செயங்கொண்டார் (B) மாணிக்கவாசகர்
(C) சுந்தரர் (D) திருஞானசம்பந்தர்
13. “திராவிட சிசு” என சம்பந்தரை அழைத்தவர்
(A) குமரகுருபரர் (B) ஆதிசங்கரர்
(C) சுந்தரர் (D) கபிலர்
14. “ஆபரேஷன் கங்கா” (Operation Ganga) – எதனை நோக்கமாக கொண்டது.
(A) கங்கை நதியை சுத்தம் செய்தல்
(B) கங்கை சமவெளி பகுதிகளை மேம்படுத்துதல்
(C) ரஷ்யாவிலிருந்து இந்தியர்களை மீட்கும் திட்டம்
(D) உக்ரைனிலிருந்து இந்தியர்களை மீட்கும் திட்டம்
15. எங்கு உள்ள ஜான்சி ரயில் நிலையம் வீராங்கனை லக்ஷ்மிபாய் ரயில் நிலையம் என பெயர் மாற்றம் செய்யப்பட்டுள்ளது.
(A) உத்ரகாண்ட் (B) டில்லி
(C) செகந்திரபாத் (D) உத்திர பிரதேசம்
16. இந்திய விளையாட்டுத் துறையில் வழங்கப்படும் மிக உயரிய விருதின் சரியான பெயர்
(A) அர்ஜுனா விருது
(B) டென்சிங் நார்கே விருது
(C) மேஜர் தயான்சந்த் கேல் ரத்னா விருது
(D) துரோணாச்சாரியா விருது
16. எம்மாநிலத்தின் பிரசித்த பெற்ற விழாவை யுனெஸ்கோ பாரம்பரிய அந்தஸ்து வழங்கியுள்ளது
(A) சித்திரை திருவிழா – மதுரை
(B) பிஷுஜீ - அஸ்ஸாம்
(C) விநாயகர் பூஜை - மும்பை
(D) துர்க்கா பூஜை - கோல்கட்டா

MS.VENMAL CHIEF TYPIST, MDU

SHALL WE LAUGH

Smt Meena Kumari, ChOS/Safety/MDU



Once upon a time! When Window was just a square hole in a room and Application was something written on a paper. When Keyboard was a Piano and Mouse just an animal. When file was a important office material and Hard Drive just an uncomfortable road trip. When cut was done with knife and paste with glue. When Web was a spider's home and Virus was flu. When Apple and Blackberry were just fruits – that's when we had a lot of time for family and friends.

Laughing Matters

When God sends help, don't ask questions

She hurried to the pharmacy to pick up the medication. When she got back to the car, she found her keys locked inside.

The woman found an old rusty coat hanger on the ground. She looked at it and said, "I don't know how to use this."

She bowed her head and asked God to send her some help.

Within five minutes an old motor-cycle pulled up, driven by a bearded man who was wearing an old biker skull rag. He got off his cycle and asked if he could help.

She said. "Yes, my husband is sick. I've locked my keys in my car. I must get home. Please, can you use this hanger to unlock my car?"

He said, "Sure." He walked over to the car, and in less than a minute the car was open.

She hugged the man and through tears said, "Thank you, God, for sending me such a very nice man".

The man heard her littler prayer and replied, "Lady, I am not a nice man. I just got out of prison yesterday; I was in prison for car theft."

The woman hugged the man again, sobbing, "Oh, thank you, God! You even sent me a professional".





தொகுப்பு : திருமதி மீனா குமாரி, chos
சேஃப்டி பிரிவு, மதுரை

हिन्दी हो या उर्दूये शब्द हैं जिसे आप और हम प्रतिदिन प्रयोग करते हैं।

श्री कलैसेल्वन, वरिष्ठ लिपिक, कार्मिक शाखा, मदुरै

क्रसं	उर्दू	हिन्दी	क्रम सं	उर्दू	हिन्दी
1	ईमानदार	सत्यनिष्ठ, सत्य परायण	33	इंतकाल	मृत्यु, निधन
2	इंतजार	प्रतीक्षा	34	बेइज्जती	तिरस्कार
3	इत्तफाक	संयोग	35	दस्तखत	हस्ताक्षर
4	सिर्फ	केवल, मात्र	36	हैरानी	आश्चर्य
5	शहीद	बलिदान	37	कोशिश	प्रयास, चेष्टा
6	यकीन	विश्वास, भरोसा	38	किस्मत	भाग्य
7	इस्तकबाल	स्वागत	39	फैसला	निर्णय
8	इस्तेमाल	उपयोग, प्रयोग	40	हक	अधिकार
9	किताब	पुस्तक	41	मुमकिन	संभव
10	मुल्क	देश	42	फर्ज	कर्तव्य
11	कर्ज	ऋण	43	उम्र	आयु
12	तारीफ	प्रशंसा	44	साल	वर्ष
13	तारीख	दिनांक, तिथि	45	शर्म	लज्जा
14	इल्जाम	आरोप	46	सवाल	प्रश्न
15	गुनाह	अपराध	47	जवाब	उत्तर
16	शुक्रिया	धन्यवाद, आभार	48	जिम्मेदार	उत्तरदायी
17	सलाम	नमस्कार, प्रणाम	49	फतह	विजय
18	मशहूर	प्रसिद्ध	50	धोखा	छल
19	अगर	यदि	51	काबिल	योग्य
20	एतराज	आपत्ति	52	करीब	समीप, निकट
21	सियासत	राजनीति	53	जिंदगी	जीवन
22	इंतकाम	प्रतिशोध	54	हकीकत	सत्य
23	इज्जत	मान, प्रतिष्ठा	55	झूठ	मिथ्या, असत्य
24	इलाका	क्षेत्र	56	जल्दी	शीघ्र
25	एहसान	आभार, उपकार	57	इनाम	पुरस्कार
26	अहसान फरामोश	कृतघ्न	58	तोहफा	उपहार
27	मसला	समस्या	59	इलाज	उपचार
28	इश्तेहार	विज्ञापन	60	हुक्म	आदेश
29	इम्तेहान	परीक्षा	61	शक	संदेह
30	कुबूल	स्वीकार	62	ख्वाब	स्वप्न
31	मजबूर	विवश	63	तब्दील	परिवर्तित
32	मंजूरी	स्वीकृति	64	कसूर	दोष

**भाषा नामक कोई चीज है ही नहीं....
केवल परिचित ध्वनि है, अपरिचित ध्वनि है।**

अनगिनत भाव-अभिव्यक्ति है....
पर प्रेम सबसे श्रेष्ठ है।

क्रसं	उर्दू	हिन्दी	क्रम सं	उर्दू	हिन्दी
65	बेकसूर	निर्दोष	88	खारिज	रद्द
66	कामयाब	सफल	89	इस्तीफा	त्यागपत्र
67	गुलाम	दास	90	रोशनी	प्रकाश
68	जन्नत	स्वर्ग	91	मसीहा	देवदूत
69	जहन्नुम	नरक	92	पाक	पवित्र
70	खौफ	डर	93	कत्ल	हत्या
71	जशन	उत्सव	94	कातिल	हत्यारा
72	मुबारक	बधाई, शुभेच्छा	95	मुहैया	उपलब्ध
73	लिहाजा	इसलिए	96	फीसदी	प्रतिशत
74	निकाह	विवाह/शादि	97	कायल	प्रशंसक
75	बेहद	असीम	98	मुरीद	भक्त
76	तहत	अनुसार	99	कीमत	मूल्य (मुद्रा)
77	हकीम	वैद्य	100	वक्त	समय
78	नवाब	राजासाहब	101	सुकून	शाँति
79	रुग	आत्मा	102	आराम	विश्राम
80	खुदकुशी	आत्महत्या	103	मशरूफ	व्यस्त
81	इजहार	प्रस्ताव	104	हसीन	सुंदर
82	बादशाह	राजा/महाराजा	105	कुदरत	प्रकृति
83	ख्वाहिश	महत्वाकांक्षा	106	करिश्मा	चमत्कार
84	जिस्म	शरीर/अंग	107	इजाद	आविष्कार
85	हैवान	दैत्य / असुर	108	जरूरत	आवश्यकता
86	रहम	दया	109	जरूर	अवश्य
87	बेरहम	बेदर्द/दर्दनाक			

Shri Kalai Selvan, Sr.Clerk, PB/MDU

शब्द जादू - जादू के शब्द

शब्द *रचे* जाते हैं,
शब्द *गढ़े* जाते हैं,
शब्द *मढ़े* जाते हैं,
शब्द *लिखे* जाते हैं,
शब्द *पढ़े* जाते हैं,
शब्द *बोले* जाते हैं,
शब्द *तौले* जाते हैं,
शब्द *टटोले* जाते हैं,
शब्द *खंगाले* जाते हैं,

... इस प्रकार

शब्द *बनते* हैं,
शब्द *संवरते* हैं,
शब्द *सुधरते* हैं,
शब्द *निखरते* हैं,
शब्द *हंसाते* हैं,
शब्द *मनाते* हैं,
शब्द *रूलाते* हैं,
शब्द *मुस्कुराते* हैं,
शब्द *खिलखिलाते* हैं,
शब्द *गुदगुदाते* हैं,
शब्द *मुखर* हो जाते हैं
शब्द *प्रखर* हो जाते हैं
शब्द *मधुर* हो जाते हैं

... इतना होने के बाद भी

शब्द *चुभते* हैं,
शब्द *बिकते* हैं,
शब्द *रूठते* हैं,
शब्द *घाव देते* हैं,
शब्द *ताव देते* हैं,
शब्द *लड़ते* हैं,
शब्द *झगड़ते* हैं,
शब्द *बिगड़ते* हैं,
शब्द *बिखरते* हैं
शब्द *सिहरते* हैं

... परन्तु

शब्द कभी *मरते नहीं*
शब्द कभी *थकते नहीं*
शब्द कभी *रुकते नहीं*
शब्द कभी *चुकते नहीं*

... अतएव

शब्दों से *खेले नहीं*
बिन सोचे बोले नहीं
शब्दों को *मान दें*
शब्दों को *सम्मान दें*
शब्दों पर *ध्यान दें*
शब्दों को *पहचान दें*
ऊँची लंबी *उड़ान दें*
शब्दों को *आत्मसात करें*
उनसे उनकी बात करें,
शब्दों का *अविष्कार करें*
गहन सार्थक *विचार करें*

... क्योंकि

शब्द *अनमोल* हैं
जुबाँ से *निकले बोल हैं*
शब्दों में *धार होती है*
शब्दों की *महिमा अपार होती है*
शब्दों का *विशाल भंडार होता है*

और

... सच तो यह है कि

*शब्दों का भी अपना
एक ससार होता है*
शब्दों को सम्मान दें

श्रीमती मीना कुमारी, मुकाधी, संरक्षा शाखा, मदुरै मंडल

भारत का स्वतंत्रता दिवस - 75वां अमृत महोत्सव

श्री सचिन कुमार सिंह, अनुवादक, मदुरै मंडल

सबको नमस्कार, नमस्ते ।

यह महानता और उद्योग का जन्मस्थान है

वीर, धीर, ज्ञान, तप एवं - शिक्षा

समर्पण का स्वरूप रहा यह देश

प्राचीन दुनिया मुकुट की तरह है यह देश

भारत देश हमारा...श्रेष्ठतम है...

- महाकवि भारतीयार ने कहा । उन्होंने हमारे देश का गौरव गाया है।

इस वर्ष हम अपने देश का 75वां स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मना रहे हैं। इस वर्ष जब हम अपनी आजादी का फल खा रहे हैं, आजादी के पेड़ पनपने के लिए देश की आजादी के यज्ञ में आहुति दिये, अपने को अर्पित किये सैनिकों के खून, बलिदान, समर्पण, संघर्ष, शांति, अहिंसा आदि का स्पृहाणीय स्मरण इस समय करना उचित है।

भारतीय 300 वर्षों के ब्रिटिश साम्राज्यवाद के, विदेशी प्रभुत्व के तहत गुलामी की जंजीरों से बंधे थे। हमारे लोगों में कुछ इस गुलामी को मानते थे, वे शांति चाहते थे और चुप रहते थे। सच्चे स्वतंत्रता सेनानी ये सब पसंद नहीं करते थे और मानते थे कि यह मेरा देश है, मेरी धरती है और कोई और यहां शासन कैसे करे? इसलिए विद्रोह कर उठे। उन्होंने अपना विरोध व्यक्त किया और क्रांति पथ को अपनाया।

प्रारंभिक चरण एक त्रि-आयामी क्रांति थी। वे जन-क्रांति, स्वदेशी जन जाति -क्रांति, जन-आंदोलन और विद्रोह हैं, लेकिन एक ही उद्देश्य है - मुक्ति पाना है। स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत सन 1763 से हुई थी। 1772 में अयार क्रांति, 1794 में विजयनगर क्रांति, 1804 में ओडिशा में जमींदार क्रांति, 1790 में तमिलनाडु में किसान क्रांति, 1800 में मैसूर क्रांति, 1814-1817 तक अलगर क्रांति, 1835-1855 तक के 20 वर्षों के लिए बिहार और बंगाल में आदिवासी क्रांति जिसमें आदिवासी नेता ने क्रांति का नेतृत्व किया, 'फिरसा मुनम' जेल गया और वहीं मरा । हालाँकि ऐसी अनगिनत क्रांतियाँ हुईं, देश भर में पहली ज्ञात क्रांति मेरठ क्रांति थी, जो सोमवार 10 मई, 1857 को हुई थी, जब 'मंगल पांडे' नामक एक बहादुर सैनिक ने अपना प्रतिरोध दिखाया और एक सैनिक की क्रांति के रूप में इतिहास में दर्ज किया।

इस क्रांति के बाद से ही लोगों में आजादी की आग धीरे-धीरे जलने लगी और यह आग पूरे भारत में फैल गई और भारतीयों को जाति, भाषा और धर्म से जोड़ दिया।

जब उत्तर में स्वाधीनता क्रान्ति जल रही थी, तब दक्षिण ने भी स्वतन्त्रता की इच्छा से विदेशी आधिपत्य के विरुद्ध संघर्ष किया, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से संघर्ष किया और अपनी शक्ति का परिचय दिया। तमिलनाडु में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध पहले लड़नेवालों में पुलिदेवन, मरुदुभाई, कट्टबोम्मन, मरुदनायक्कम, ओण्डीवीरन, वीरन अळगुमुत्तुक्कोन, धीरन चिन्नमलै, ऊर्मैचुरै आदि थे।

राजाओं की वीरता के तुल्य ही नायिका वेलुनाचियार अंग्रेजों के सामने खड़ी हुईं। उसके सेनापति कुइलिनि ने उस दिन शेरनी की तरह बदलाव लिया। खुद मैदान में उतरकर दुश्मन के शस्त्रागार को नष्ट कर दिया और हमारे देश की बहादुरी को बरकरार रखा।

हिंदी तेरे कितने नाम

राष्ट्र भाषा, राजभाषा, राज्य भाषा, संपर्क भाषा.....

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में 20वीं सदी की शुरुआत ने दुनिया को एक नई रोशनी दी, लोगों की एकता के लिए आश्चर्यजनक रूप से अहिंसा-संघर्ष, मानव शक्ति को सम्मान सहित संघर्ष करने के लिए महात्मा गांधी जी ने एक नया पथ दर्शाया। इससे पहले, ब्रिटिश सरकार, जिसने लोगों को हिंसा, शस्त्र और अत्याचार से दबा दिया था। लेकिन गांधी के शांतिपूर्ण संघर्ष और अहिंसक संघर्षों का सामना करने में असमर्थ थी। गांधीजी का अहिंसात्मक तरीका, पंडित नेहरू, राजाजी कक्कन, वल्लभाई पटेल, जिन्ना, कामराज, सत्यमूर्ति और कई अन्य लोगों को स्वतंत्रता संग्राम के मैदान में उतार दिया।

एक ओर, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की भारतीय राष्ट्रीय सेना ने अंग्रेजों को चकित कर दिया, और पसुम्बोन मुत्तुरामलिंगम ने नेताजी की पद्धति का पालन करते हुए तमिलनाडु में भारतीय मुक्ति संग्राम का नेतृत्व किया। इन लोगों का मानना है कि शांति, अहिंसा के बजाय हिंसा और सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है।

बंगाली कवि बंकिम चंद्र चटर्जी, जिन्होंने गीतों के माध्यम से भारतीयों के बीच स्वतंत्रता आंदोलन की भावना जगाया, ने अपने गीत 'वंदे मातरम' से ख्याति प्राप्त की। स्वतंत्रता संग्राम का पहला नारा बना वंदे मातरम, सभी सभाओं में गाया गया और अब हमारा राष्ट्रगीत पूरी दुनिया में फैला हुआ है।

तमिलनाडु में, महाकवि भारती अपने स्वतंत्रता संग्राम गीतों के लिए प्रसिद्ध हुए। उनके गीत हृदयस्पर्शी हैं और श्रोताओं को मुक्ति की इच्छा देनेवाले भावों से भरा हुआ था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, जिन लोगों ने किसी भी भावना के बिना चुप अपने-अपने घर में बैठे रहे, उनके विरुद्ध कई गीत लिखे हैं।

நெஞ்சு பொறுக்குதில்லையே

இந்த நிலை கெட்ட மனிதரை நினைத்து விட்டால்

அஞ்சி அஞ்சி சாவார் இவர் அஞ்சாத பொருளில்லை

அவனிணியே என்று.

महाभारत की कहानी को जिससे संपूर्ण भारत परिचित है, एक पात्र पांजालि को लेकर पांजालि शपथ नामक एक लघु काव्य की रचना की जिसमें प्रत्यक्ष रूप से ही ब्रिटिश सरकार की निंदा की थी। जिसने स्वतंत्रता संग्राम के भाव को एक गीत में बदल दिया था - उन्होंने लोगों को यह कहकर आकर्षित किया कि धर्म का जीवन नष्ट होते दीखेंगे और अंत में धर्म की ही जीत होगी। देश की आजादी भारत की आजादी! - गीत से ही नहीं कई मुक्ति गीत, राष्ट्रगान और महिला गीतों की रचना कर समाज की प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया।

राष्ट्रीय कवि भारती की तरह, कवि नामकल रामलिंगम ने गांधीवादी तरीके और स्वतंत्रता संग्राम के गीतों के माध्यम से जनता को एकजुट किया। गांधी पथ को अपनी गीतों में उन्होंने यो रचा है -

बिना तलवार और बिना खून के युद्ध आ रहा है.....

'सनातन सत्य में विश्वास करने वाला कोई भी बिना शामिल हुए नहीं रहेंगे कहकर भारतीयों को प्रेरित करनेवाले कई गीत लिखे थे। गांधीजी का नमक सत्याग्रह के समर्थन में कई गीत लिखे थे। तमिलनाडु में नमक सत्याग्रह का नेतृत्व ऋषि राजाजी ने किया था।



मुस्कुराने की मकसद ना ढूँढ वरना जिंदगी यूँ ही कट जाएगी कभी बेवजह मुस्कुरा के देख तेरे साथ साथ जिंदगी भी मुस्कुराएगी।

डॉ. बी.आर.अम्बेडकर ने भूखे रहे आधे से अधिक भारतीयों के लिए इंग्लैंड के संसद में आवाज उठाई। दलित लोगों की आवाज के रूप में 5 गोलमेज सम्मेलनों में भाग लेने वाले और भारत के संविधान का मसौदा तैयार करने और लिखने वाले डॉ. बी.आर. अम्बेडकर हमारे स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं में महत्वपूर्ण थे।

जब स्वदेशी आंदोलन तमिलनाडु में व्यापक रूप से जाने लगा, तो उन्होंने उनके लिए अपनी संपत्ति बेच दी, एक स्वदेशी शिपिंग कंपनी शुरू की, अंग्रेजों द्वारा लगाये गये इल्जाम को सामना करने के बाद मुश्किल में पड़ गए, और यह स्वतंत्रता के इतिहास में अपने खून से लिखे व.उ.चिदम्बरम का खंड अविस्मरणीय है।

अपने जीवन के अधिकांश दिन-रात कारागार में बिताये और फांसी के फंदे को खुशी-खुशी से चूमे, मौत को जीतने वाले और लोगों के दिलों में बसने वाले गर्व से भारतीय कहनेवाले भगतसिंह के देश प्रेम में आजादी जिंदा है।

कई दशकों से लगातार किये गये आंदोलन और लाखों के जीवन त्याग ने अंत में फल दे ही दिया। 15 अगस्त 1947 को भारत को स्वतंत्रता मिल गई।

सभी त्रासदियां सूरज के सामने केकोहरे की तरह मिट गई। सभी दुख यों ही गायब हो गए। रक्त, बलिदान, क्लेश, जेल में मार, दर्द, बीमारी, सभी स्वतंत्रता के क्षण में भूल गए। एक नए भारत का निर्माण हुआ। उस विदेशी को बाहर निकालने के लिए हुआ संग्राम पूरा हुआ। अब हम खुद के मालिक रहे, खुद शासक रहे।

भारतीय राष्ट्र के आधुनिक शिल्पकार जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में उत्कृष्ट परियोजनाओं के माध्यम से देश का विकास हुआ, बिखरे हुए छोटे-छोटे राज्य भारत का हिस्सा बने, यूनियनों का एकीकरण हुआ और हम 26 जनवरी 1950 को एक गणतंत्र राष्ट्र बन गया। इस संघर्ष में कितने ही लोगों का, भारतीयों का त्याग है। हमने जो आजादी हासिल की है, उसकी रक्षा करेंगे। देश को आगे बढ़ाएंगे। इस दिन हम उन लोगों को याद करते हैं जिन्होंने हमारे देश के लिए काम किया है।
जय हिंद !!



SHRI SACHIN KUMAR SINGH
TRANSLATOR I/MADURAI DIVISION

தமிழே அமுதே

श्रीमती मीना कुमारी, मुकाधी,
संरक्षा शाखा, मदुरै

தெற்கிற்கு இன்னொரு சொல் என்ன?

ஒரு பொருளுக்குப் பல சொற்களை வழங்குகின்ற தமிழில், திசைகளுக்கு வேறு சொற்கள் இல்லாமல் போகுமா?

கிழக்கு என்பதற்குரிய இன்னொரு சொல் குணக்கு. நமக்குக் கிழக்கே இருப்பது கடல். அதை வங்காள விரிகுடா என்று அழைக்கிறோம். அது ஆங்கிலேயர் வைத்த பெயராகும். நாம் அப்பெயரைக் கொண்டா கிழக்கே இருக்கும் கடலை அழைத்தோம்? இல்லை.

வங்காள விரிகுடாவைக் 'குணகடல்' என்று அழைத்தோம். குணக்கு என்றால் கிழக்கு. கிழக்கே இருக்கும் கடல் குணகடல். குண என்ற பெயரில் தொடங்கும் ஊர்ப் பெயர்களைக்கூட கிழக்குத் திசை சார்ந்த பொருளில் ஆராய வேண்டும்.

மேற்கேயுள்ள அரபிக் கடலுக்குரிய தமிழ்ப் பெயர், குடகடல். குடக்கு என்றால் மேற்கு. குடநாடு என்றால் மேற்குநாடு. குடவாயில் என்றால் மேற்கு வாயில். இவ்வூர் இறைவர் மேற்கு வாயில் கொண்டவராக இருக்கிறாராம்.

வடக்கு என்பதற்கு இன்னொரு பெயர் உதக்கு. அதனால்தான் கோவைக்கு வடக்கே இருந்தே மலைமண்டலத்தை உதக்கு மண்டலம் என்ற பொருள்படுமாறு "உதகமண்டலம்" என்று அழைத்துள்ளனர்.

கிழக்கிற்கு குணக்கு. மேற்கிற்கு குடக்கு. வடக்கிற்கு உதக்கு. தெற்கிற்கு இன்னொரு பெயர் என்ன?

தமிழ்த்தாய் வாழ்த்தில் 'தெக்கணமும் அதிற்சிறந்த திராவிட நல்திருநாடும்' என்ற அடியை அறிவோம். அதில் வரும் தெக்கணம் என்பது தெற்குத் திசை. தெற்கிற்கு இன்னொரு சொல் தெக்கணம். தெற்கிலிருந்து வீசும் காற்று தென்றல். அதனால் தென்றி என்றாலும் தெற்குத்தான்.

இப்பொது தெற்கிற்கு வழங்கப்படும் இன்னொரு சொல்லும் கிடைத்தாயிற்று. தெக்கணம் என்பது தான் அது. தென்றி என்பது இன்னொன்று. யாமம், யாமி, யாமை ஆகிய சொற்களும் தெற்கினைக் குறிக்கின்றன.

தொகுப்பு : திருமதி மீனா குமாரி, chos
சேஃப்டி பிரிவு, மதுரை

जीवन सत्य है "संघर्ष"

श्री सचिन कुमार सिंह
अनुवादक, मदुरै

सबका जीवन बीत रहा है मुश्किलों से लड़ने में
अन्तर साहस रीत रहा है कर्म-पथ पर चलने में

संघर्ष ही जीवन यथार्थ है बाकी सब है भ्रम प्यारे
मन को कर पथर कठोर ही चलता जीवन क्रम प्यारे

जीवन है उस मनुष्य में जो कर्मठता का पर्याय हो
पेट पालकर अपने जन का नित करता स्वाध्याय हो

जीवन है उस माँ में जो शिशु पर अपना सर्वस्व लुटाती है
उसके हित असह्य वेदना सहकर जो मुस्कराती है

जीवन है उस नदियों में जो सबकी प्यास मिटाती है
अपने पावन जल से सभी जीवों को तृप्त कर जाती है

जीवन है उस मनुष्य में जो न भाग्य भरोसे रहता है
जिसके साहस विधि को भी चुनौती देता है

बिना संघर्ष किए जो मिलता वह तो भीख समान है
परिश्रम करके जो हासिल हो उसमें ही सम्मान है

संघर्ष ही जीवन सत्य है इसमें कोई दो राय नहीं
जब मन में हो इच्छा प्रबल फिर पथ की कोई परवाह नहीं

जो मंजिल पाना चाहता है तो शूलों से घबराना कैसा?
शारीरिक सुखों की खातिर पथ बाधाओं से डर जाना कैसा?

संघर्ष की ज्वाला में जलकर तू कन्यन बन जाएगा
अन्तर शक्ति के बल पर स्वर्णिम भविष्य ले आएगा

कर्मपथ ही एकल विकल्प है अपनी मंजिल तक जाने का
संघर्ष ही एकल विकल्प है अनन्त कीर्ति को पाने का ॥



*Shri Sachin Kumar Singh,
Translator, Madurai*

युद्ध

वह जो युद्ध के समर्थक हैं
वह नहीं आएंगे कभी खेतों में हल चलाने
वह नहीं चाहेंगे तरक्की
वह विश्वास रखते हैं पांव खींच कर गिराने में
तो तब जब वह हथियार उठाएं
तुम उठाना फावड़ा, हसुआ, खुरपी
या जो भी हाथ आए
ये वह हथियार हैं
जो धरती के सीने को चीर कर
उगाते हैं फसलें
नहीं टिकता कोई अत्याधुनिक हथियार
इनके सामने,
कितनी सभ्यताएं लिखी गई इन हथियारों से
कितने युद्ध लड़े गए और
हर युद्ध के अंत में यही बचे
युद्ध के मलबों को साफ करते
या बचे हुए को पालने के लिए
फिर से धरती का सीना चीरते।

Shri Vinay Kumar Chaurasia,
Sr. Clerk/Works/O/MDU

आजादी

तुम्हें मुबारक तेरी आजादी,
हम आज भी भूखे नंगे हैं,
ज़हर हो जाता है,
पानी तेरा छूने से,
हम आज भी इतने गंदे हैं।
वही हाथ जोते रे घर का
सारा काम करता है,
दूध मलाई गेहूँ चावल से
तेरा घर भरता है,
काट अंगूठा बनते द्रोण,
लोग निज ईर्ष्या में अंधे हैं,
तुम्हे मुबारक तेरी आजादी
हम आज भी भूखे नंगे हैं।
वह नादान अबोध बाल कथा,
तू तो अच्छे ज्ञानी थे,
क्रूर निर्दयी निर्लज्ज मानुष,
क्या इतने अभिमानी थे।
दोष हैं इनके मन मस्तिष्क में
खुद ही में ये दंगे हैं.....!!
तुम्हें मुबारक तेरी आजादी
हम आज भी भूखे नंगे हैं...॥

हिम्मत और ज़िन्दगी

श्री विनय कुमार चौरसिया
वरिष्ठलिपिक/मदुरै

ज़िन्दगी के असली मजे उनके लिए नहीं हैं जो फूलों की छांह के नीचे खेलते और सोते हैं। बल्कि फूलों की छांह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है तो वह भी उन्हीं के लिए है जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं जिनका कंठ सूखा हुआ, होंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में जो अमृतवाला तत्व है, उसे वह जानता है जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है। सुख देनेवाली चीजें पहले भी थीं और अब भी हैं। फर्क यह है कि जो सुखों का मूल्य पहले चुकाते हैं और उनके मजे बाद में लेते हैं उन्हें स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है।

जो लोग पाँव भीगने के खौफ से पानी से बचते रहते हैं, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्हीं के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हें अभ्यास है वे मोती लेकर बाहर आएंगे।

चांदनी की ताजगी और शीतलता का आनंद वह मनुष्य लेता है जो दिन भर धूप में थककर लौटा है, जिसके शरीर को अब तरलाई की जरूरत महसूस होती है और जिसका मन यह जानकर संतुष्ट है कि दिन भर का समय उसने किसी अच्छे काम में लगाया है। इसके विपरीत वह आदमी भी है जो दिन भर खिड़कियाँ बंद करके पंखों के निचे छिपा हुआ था और अब रात में जबाहर चांदनी में लगाई गई है। भ्रम तो शायद उसे भी होता होगा कि वह चांदनी के मजे ले रहा है, लेकिन सच पूछिए तो वह खुशबूदार फूलों के रस में दिन-रात सड़ रहा है।

उपवास और संयम ये आत्महत्या के साधन नहीं हैं। भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। 'त्यक्तेन भुंजीताः', जीवन का भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थका ही उपदेश नहीं है, क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन में जो आनंद प्राप्त होता है, वह निरा भोगीबन कर भोगने से नहीं मिल पाता। बड़ी चीजें बड़े संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों में पल कर दुनिया पर कब्ज़ा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने बाप के दुश्मन को परास्त कर दिया था जिसका एक मात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था, और वह भी उस समय, जब उसके बाप के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे। फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षा गृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। श्री विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि ज़िन्दगी की सब से बड़ी संपत्ति हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से ही पैदा होते हैं।

ज़िन्दगी की दो सूरतें हैं। एक तो यह कि आदमी बड़े-से-बड़े मकसद के लिए कोशिश करें, जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाये, और अगर असफलताएँ कदम-कदम पर जोश की रोशनी के साथ अधियाली का जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पावें न हटाये। दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हम जोली बन जाये जो नतो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुःख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूली में बसती हैं जहाँ न तो जीत हंसती है और न कभी हार के रोने की आवाज सुनाई पड़ती है। इस गोधूलीवाली दुनिया के लोग बंधे हुए घाट का पानी पीते हैं, वे ज़िन्दगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी ज़िन्दगी को दाब पर लगा देने में कोई आनंद नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा है तो फिर असलीम जातो पाँव बढ़ाते जाने में ही है।

शुक्रिया तेरा तिरा आने से रौनक तो बढ़ी ।
वरना ये महफिल-ए-जज्बात अधूरी रहती ॥

एक उम्र के बाद उस उम्र की बातें,
उम्र भर याद आती है,
पर वह उम्र नहीं आती।

साहसकी ज़िन्दगी सबसे बड़ी ज़िन्दगी होती है। ऐसी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिन्ता नहीं करता कि तमाशा देखनेवाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीनेवाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करनेवाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर बनाते हैं। साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है जिन सपनों का कोई व्यावहारिक अर्थ नहीं है। साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, वह अपने विचारों में रमा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है। झुंड में चलना और झुंड में चरना, यह भैंस और भेड़ का काम है। सिंह तो बिलकुल अकेला होने पर भी मगन रहता है।

अर्नाल्ड बेनेट ने एक जगह लिखा है कि जो आदमी यह महसूस करता है कि किसी महान निश्चय के समय वह साहस से काम नहीं ले सका, ज़िन्दगी की चुनौती को कबूल नहीं कर सका, वह सुखी नहीं हो सकता। बड़े माँके पर सहस नहीं दिखानेवाला आदमी बराबर अपनी आत्मा के भीतर एक आवाज सुनता रहता है, एक ऐसी आवाज जिसे वही सुन सकता है और जिसे वह रोक भी नहीं सकता। यह आवाज उसे बराबर कहती रहती है, "तुम साहस नहीं दिखा सके, तुम कायर की तरह भाग खड़े हुए।" सांसारिक अर्थ में जिसे हम सुख कहते हैं उसका न मिलना, फिर भी, इससे कहीं श्रेष्ठ है कि मरने के समय हम अपनी आत्मा से यह धिक्कार सुनें कि तुम में हिम्मत की कमी थी, कि तुम में साहस का आभाव था, कि तुम ठीक वक़्त पर ज़िन्दगी से भाग खड़े हुए।

ज़िन्दगी को ठीक से जीना हमेशा ही जोखिम झेलना है और जो आदमी सकुशल जीने के लिए जोखिम का हर जगह पर एक घेर डालता है, वह अंततः अपने ही घेरों के बीच कैद हो जाता है और ज़िन्दगी का कोई मजा उसे नहीं मिल पाता, क्योंकि जोखिम से बचने की कोशिश में, असल में, उसने ज़िन्दगी को ही आने में रोक रखा है।

ज़िन्दगी से, अंत में, हम उतना ही पाते हैं जितनी कि उसमें पूंजी लगाते हैं। यह पूंजी लगाना ज़िन्दगी के संकटों का सामना करना है, उसके उस पन्ने को उलट कर पढ़ना है जिस के सभी अक्षर फूलों से ही नहीं, कुछ अंगारों से भी लिखे गए हैं। ज़िन्दगी का भेद कुछ उसे ही मालूम है जो यह जानकार चलता है कि ज़िन्दगी कभी भी खत्म न होनेवाली चीज़ है।

अरे ! ओ जीवन के साधकों ! अगर किनारे की मरी सीपियों से ही तुम्हें संतोष हो जाये तो समुद्र के अंतराल में छिपे हुए मौक्तिक - कोष को कौन बाहर लायेगा?
दुनिया में जितने भी मजे बिखरे गए हैं उनमें तुम्हारा भी हिस्सा है। वह चीज भी तुम्हारी हो सकती है जिसे तुम अपनी पहुँच के परे मानकर लौंटे जा रहे हो।
कामना का अंचल छोटा मत करो, ज़िन्दगी के फल को दोनों हाथों से दबाकर निचोड़ो, रस की निर्झरी तुम्हारे बहाए भी बह सकती है।

यह अरण्य, झुरमुट जो काटे अपनी राह बना ले,
क्रीत दास यह नहीं किसी का जो चाहे अपना ले।
जीवन उनका नहीं युधिष्ठिर ! जो उससे डरते हैं।

Shri Vinay Kumar Chaurasia,
Sr. Clerk/Works/O/MDU

अनुवाद सरलीकरण

श्रीमती एल.मुतुलक्ष्मी
वरिष्ठ अनुवादक , मदुरै

अनुवाद का सरलीकरण कई दृष्टियों में होती है। अनुवाद को सरल बनाने के लिए सबसे जरूरी शर्त यह है कि स्रोत भाषा के जानकारी और लक्ष्य भाषा पर जबरदस्त अधिकार। इन दोनों तत्वों के बिना अनुवाद के क्षेत्र में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते। इसके अलावा यदि विषय की अच्छी जानकारी हो तो सोने पर सुगाह होने जैसा है।

अनुवाद करते समय एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में अंतरण करते समय अनुवाद इस प्रक्रिया में मूल कृति का संहार करता है तब कहीं पुनर्सृजन होता है। - गायत्री चक्रवर्ती।

अनुवाद में सरलीकरण के लिए भारत सरकार ने भी कई कदम उठाये हैं।

अनुच्छेद 351 - हिंदुस्तानी शैली का प्रयोग और 8वीं अनुसूची में शामिल विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को समावेश करना।

इसके लिए 1971 में केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा जारी हिंदी की मानक वर्तनी, वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली द्वारा विदेशी शब्दों का अनुवाद और लिप्यंतरण आदि के संबंध में महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिपादित किये गये।

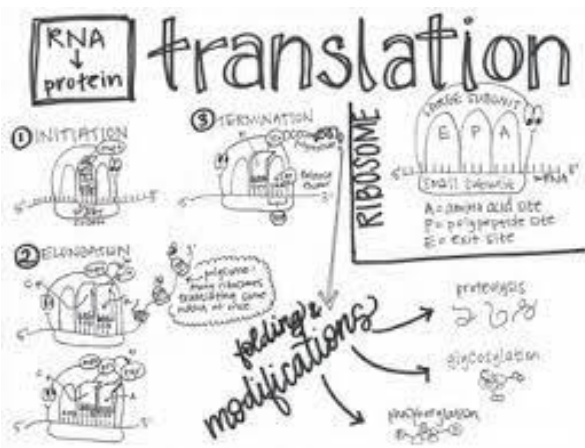
इसी प्रकार विधि शब्दावली आयोग ने भी अनेक शब्दों को शब्दकोश में शामिल किया। ये सब सरलीकरण की ही प्रक्रिया थी।

सरकार के अलावा हिंदी के मूर्धन्य रचनाकारों ने भी सरल भाषा में कतिपय अंग्रेजी शब्दों के पर्याय बनाये।

उपरोक्त उदाहरणों से समय के साथ-साथ सरकारी स्तर पर और गैर-सरकारी स्तर पर अनुवाद को सरल बनाने के लिए अनेक प्रयास किये जा रहे हैं।

भूमण्डली के कारण अनेक विदेशी शब्दों को हमने लिप्यंतरण के माध्यम से अपनाया। यह भी सरलीकरण की एक प्रक्रिया है। इसी प्रकार हमने भाषा के आर्थ प्रयोग के तहत कुछ अशुद्ध अभिव्यक्तियों को भी सहर्ष स्वीकार किया है। जैसे - दीनानाथ, विश्वामित्र, अनीता आदि।

स्पष्टतः यह कहा जा सकता है कि प्रजातंत्र में प्रजा का शासन होता है इसलिए अनुवाद या भाषा के क्षेत्र में आम-जनता हस्तक्षेप भी महत्वपूर्ण रहा है। इस कारण अनुवाद में एक विशेष प्रकार की सहजता अपने आप आनी शुरू हो गयी है। और यह आगे भी जारी रहेगी। प्रत्येक शब्द के लिए अब आम वक्ता अपनी अभिव्यक्ति के लिए हिंदी या भारतीय भाषा पर विशेष रूप से आश्रित नहीं रहता। इसी प्रक्रिया में अनुवाद भाषा के जरिए स्वतः सरल होता जाएगा।



दूसरी भाषा के अच्छे विचारों को हमारी अपनी भाषा में लाना है तो अनुवाद ही एक मात्र उपाय है।

अनुवादकों को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों में समान अधिकार होना चाहिए ।

हिंदी के सरलीकरण के विरोध में भी कई तर्क दिए जाते हैं। सरलीकरण के नाम से हिंदी को जड़ से उखाड़ने की बात ये लोग मानते हैं। उन लोगों का कहना है कि - हिंदी का सरलीकरण एक ऐसा विषय है जिसने अनुवाद और सरलीकरण के नाम पर हिंदी को लोक और जड़ से काटने का कार्य किया है। कई बार अनुवाद आपको अपनी संस्कृति से घृणा करना सिखाता है। अनुवाद और वह भी धार्मिक-राजनीतिक अनुवाद एक ऐसा साधन है जो कुछ न करते हुए भी आपको एकदम से काट देता है, जड़ कर देता है। यही कारण है कि अनुवाद पढ़ते समय सजग होकर पढ़ना चाहिए!

इसका उदाहरण हम देखते हैं, आजकल एक नितांत आम शब्द 'काऊ ब्रेल्ट' से! गाय की पट्टी के निवासी हैं! यह गाय की पट्टी क्या हुआ? यह कैसा शब्द है? और जो काऊ ब्रेल्ट के निवासी हैं वह पिछड़े कैसे हो गए? कैसे गंवार शब्द पिछड़ेपन का प्रतीक बन गया? ऐसे कई प्रश्न हैं जो अवधारणात्मक अनुवाद में आपको मिलेंगे। स्वयं के प्रतीकों पर लब्धित होने की यह कहानी हमारे धर्म ग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद और फिर अनूदित धर्म ग्रंथों को स्रोत माने जाने के कारण आरम्भ हुई।

दो उदाहरण से बात को और गंभीरता से समझा जा सकता है। तुलसीदास रामचरित मानस में लिखते हैं

रयामसुरभि पय बिसद, अति गुनद करहिं सब पान,

गिराग्राम्य सिय राम जस, गावहिं सुनहिं सुजान।

अर्थात्, काली गाय का दूध उज्ज्वल और अत्यंत गुणदायक जानकर भी सब पान करते हैं, उसी तरह गँवारी बोली में कहे गए सियाराम के यश को सज्जन लोग गान करते हैं और सुनते हैं।

मगर जब इसका अंग्रेजी अनुवाद होता है तो 'द रामायण ऑफ तुलसीदास' में यह गंवार अर्थात् ग्राम्य भाषा को रफ (असभ्य) भाषा कर दिया जाता है। इसके अनुवाद में लिखा गया है -

The milk cow can be black; its milk is white and very wholesome, and all men drink it and so though my speech is rough, it tells the glory of Sita and Rama and will therefore be heard and repeated with pleasure by sensible people.

अंग्रेजों के लिए ग्राम का अर्थ पिछड़ा था, गाय एक पशु थी एवं हमारे यहाँ की व्यवस्था एक नई दुनिया। वनवासियों की दुनिया पर उन्होंने जो किताबें लिखी हैं, उन्हें पढ़कर ज्ञात होता है कि वह एक उन्मुक्त एवं स्वतंत्र समाज देखकर हतप्रभ हैं। 'छोटा नागपुर के ओरांस' ('the oraons of chota nagpur') में उराऊ की समृद्ध परम्परा देखकर हैरान हैं। वह यह देखकर हैरान हैं कि कैसे जंगलों में रहने वाले लोग धरती माता और सूरज का रिश्ता जोड़कर खुद को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध किए हैं।

अनुवाद वह कला है - जेराक्स है पर दूसरी भाषा में है।

एक भाषा के भाव को यदि हम दूसरी भाषा में ज्यों का त्यों व्यक्त कर पाये तो वही श्रेष्ठ अनुवाद है।

वह यौन स्वतंत्रता देखकर भी हैरान हैं। अब जिनके लिए लोक भाषा का अर्थ ही रफ (असभ्य) भाषा है, वह किस तरह से ग्रामीण जीवन और उसके साथ ही साथ प्रकृति की निकटता को समझ पाएंगे? जिस भारत में उन्होंने कदम रखा वह भारत प्रकृति से प्रेम करने वाला भारत था, नदियों को पूजने वाला भारत था। (कृपया नदियों के सम्बन्ध में अभी की जा रही लापरवाही का उदाहरण न दिया जाए क्योंकि नदियों का प्रदूषण भी औपनिवेशिक काल में आरम्भ हुआ), वह जिस भारत में आए उसके सुदूर गावों में जो व्यवस्था थी वह उसके लिए पर्याप्त थी।

कहा जाता है कि किसी भी भाषा का अस्तित्व उसकी शुद्ध वर्तनी और व्याकरण में निहित होता है। यह हिंदी से लेकर सभी भाषाओं पर लागू होता है। भारत विभिन्नताओं का देश है। यहां प्रत्येक 5 से 10 कोस में पहनावा, खानपान और बोली में अंतर देखने को मिलता है। लेकिन, अधिकतर (जिसमें मुख्यतः उत्तर भारत के प्रदेश शामिल हैं) हिंदी भाषा के द्वारा ही एकजुट और समानता पाते हैं। बारहवीं में अंग्रेजी भाषा की किताब में एक पाठ है जिसका हिंदी अनुवाद नाम 'अंतिम पाठ' है। उस पाठ की एक पंक्ति भाषा पर सबसे सटीक बैठती है 'यदि किसी भी राज्य या देश को गुलाम बना दिया जाता है और उस राज्य या देश के लोग अपनी मातृभाषा से जुड़े रहते हैं तो इसका अर्थ यह होता है कि आपने उन्हें पिंजरे में बंद तो कर दिया है लेकिन उस पिंजरे की चाभी उनके हाथ में है।'

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में भी यह सटीक बैठता है। क्योंकि, जब जुगल किशोर शुक्ल जी ने उदंत मार्चण्ड के रूप में हिंदी का प्रथम अखबार निकाला। तो, उसके पीछे भी यही सोच रही होगी। और, लगभग सभी चर्चित क्रांतिकारियों द्वारा हिंदी में समाचार पत्र निकाल उसे एक संवाद का माध्यम भी इसलिए ही बनाया गया होगा। खैर, यह तो अब पुरानी बातें हो चुकी हैं। वर्तमान जो कर रहा है अब भविष्य उस पर ही निर्भर करेगा।

आजकल हिंदी लेखन में एक नया रुझान पैदा हो चुका है इसे 'हिंग्लिश' के रूप में बदलने का। अगर हम किताबों और समाचार पत्रों से हटकर शिक्षा पद्धति पर जाएं। तो, आज सिर्फ कुछ सरकारी विद्यालयों में ही हिंदी माध्यम की पढ़ाई सिमट कर रह गयी है। अन्य विद्यालयों में तो सिर्फ दसवीं तक की एक विषय बनकर सिर्फ एक औपचारिकता बना दी गयी है। एक तरफ हम अन्य भाषाओं मुख्यतः अंग्रेजी में पाते हैं कि नए-नए कठिन शब्दों को लाकर भाषा को नए आयामों तक ले जाया जा रहा है। दूसरी तरफ हिंदी के सरलीकरण के नाम पर उसके मूल को नष्ट किया जा रहा है।

भाषा की सजीवता हम जैसे प्रयोगकर्ताओं के हाथ में है। उसे पनपना या नष्ट करना हम ही हैं। भाषा के साथ लगाव होना प्राकृतिक है। हिंदी ही नहीं, सभी भारतीय भाषाओं के स्वरूप को कायम करते हुए विकसित करेंगे।



SMT. MUTHULAKSHMI
SR. TRANSLATOR I/MADURAI DIVISION

उषा प्रियंवदा की कहानियों का कथासार

सुश्री एस.महेश्वरी
नेहरू आर्ट्स और साइंस कॉलेज
टी.एम.पालयम्, कोयम्बतूर
शोध छात्रा

विषय प्रवेश

समाज वास्तव में व्यक्तियों के पारस्परिक मिलन की उपज है। साहित्य का सृजनकर्ता लेखक है। साहित्यकार समाज की आदर्शवादिता, निष्ठा समाज की विकृतियों, समाज की वैषम्य आदि को बड़े ही मार्मिक तथा विश्वसनीय ढंग से, आवश्यकता हो तो सुधार के लिए, अन्यथा प्रशंसा एवं अनुपालन के लिए प्रस्तुत करते हैं। इस क्षेत्र में, प्राचीन काल से लेकर वर्तमान युग तक जिन विधाओं का उद्भव और विकास हुआ उनमें कहानी का स्थान अन्यतम है। समस्त साहित्यांगों में कहानी ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जो अपने लघु परिवेश में भी वृहत साहित्यांगों में कहानी ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जो अपने लघु परिवेश में भी बृहत जीवन को अभिव्यंजित करने में समर्थ है। भगवती प्रसाद बाजपेयी मानते हैं - "कहानी जीवन रहस्य की अभिव्यंजना है। वह एक लघुकथा होती है जिसमें जीवन के किसी एक तत्व, किसी एक मर्म और लक्ष्य की झलक रहा करती है। एक अनिश्चय, एक दुविधा तथा संयम, चारों ओर से केन्द्रीभूत करके अंत में स्पष्ट किया जाता है।" यह एक महत्वपूर्ण और लोकप्रिय साहित्यिक विधा है। इसका विकास कथानिका से हुआ है। यह जीवन के यथार्थ की प्रतिछाया होती है। कहानी मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति होती है। इसकी बढ़ती लोकप्रियता का मुख्य कारण है कि आज का मानव जीवन अत्यधिक व्यस्त है। लोग अवकाश खोजते हैं, परंतु वह उन्हें अल्पांश में ही प्राप्त हो पाता है और इस क्षणिक अवकाश में जब वे कुछ मनोरंजन के लिए पढ़ना चाहते हैं तो ये कहानियां पढ़ना अधिक रुचिकर समझते हैं क्योंकि यह कम से कम समय में, एक दम में पढ़ी जा सकती है। कहानी यथार्थ का प्रस्तुतीकरण है। आधुनिक महिमाके कथाकारों में उषा प्रियंवदा का नाम उल्लेखनीय है इनकी कहानियों में जीवन की विभिन्न विसंगतियों, रुढ़ियों के प्रति विद्रोह, घुटन से मुक्त होने की आकांक्षा, मोहभंग आदि के स्वर मुखर हुए हैं। लेखिका कहानियों में रोज समाज में बदलते तथा टूटते और जुड़ते नारी-पुरुष के रिश्तों और संबंधों को यथार्थ रूप से चित्रित किया गया है। इनकी कहानियों में नगर बोध की उदासी शहरी जीवन, पाश्चात्य जीवन, आधुनिक जीवन के पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन, सामाजिक मूल्य विघटन की स्थितियां, विभिन्न तथा यथार्थ रूपों में चित्रित हैं।

पैरम्बुलेटर

पैरम्बुलेटर इस कहानी के नायक परमेश्वरी और नायिका कालिन्दी हैं। दोनों ही मध्यवर्गीय परिवारवाले हैं। जब नायिका की शादी होती है और पत्नी बनती है तो उसकी कल्पना, स्वप्न, भावनाएँ, पुरुष से संबंधित होती हैं। यह उसके व्यक्तित्व का प्राथमिक पहलू है। जब वह माँ बनती है या माँ बनने की प्रक्रिया में है तो उसकी कल्पना बच्चे और उसके भविष्य पर केन्द्रित है।

कालिन्दी बच्चे के आगमन से पूर्व ही उसके लिए सामान जुटाती है और एक पैरम्बुलेटर खरीदती है। वह तरह-तरह की कल्पनाएँ करती है, "अब मैं इसके नाम की गद्दियाँ सीऊँगी, छोटे छोटे तकिये पर रंग-बिरंगे फूल बनाऊँगी।"

किंतु दुर्भाग्यवश उसे मरी हुई लड़की पैदा होती है और उसके सारे स्वप्न टूट जाते हैं। इस प्रकार सात वर्ष बीत जाते हैं। उसके पति की नौकरी छूट जाती है। जब पैरम्बुलेटर को बेचने की बात उठती है तो वह चिल्लाकर कह देती है - "नहीं, नहीं, मैं गाड़ी नहीं बेचूँगी।" जब उसकी ननद उस गाड़ी को अपने बच्चे के लिए ले जाना चाहती है परंतु यह उसे नहीं देती।

**"Sharing the fun of fishing turns strangers
into friends in a few hours."**

अगर आप भी सफलता की सीढ़ी का पहला कदम चढ़ना चाहते हो तो इन 3 कहानियों को आपको पढ़ना ही चाहिए

आठवें साल वह पुनः गर्भवती बनती है और जब माँ होकर उसकी बगल में शिशु को देखती है तो वह सारी पीड़ा भूल जाती है। बच्चे को पाकर उसे राहत मिलती है। वे पुनः शहर आ जाते हैं। शहर का घर बहुत ही छोटा और हवाहीन है।

जब बच्चे की तबीयत खराब होती है और दवा के लिए पैसे नहीं होते तो वह अपने पति से कुछ न कुछ रुपये के लिए करो कहती है। जब पैसे का बंदोबस्त नहीं कर पाते हैं तो वह अपने पति से परम्बुलेटर को बेचने के लिए कह देती है, उसके लिए बच्चे की जान उससे ज्यादा महत्वपूर्ण है। परम्बुलेटर से उसे इसलिए प्यार था कि उससे बच्चे की स्मृतियाँ जुड़ी थी किंतु अब तो बच्चा है जो परम्बुलेटर से अधिक प्रिय है।

मोहबंध

मोहबंध कहानी दो सहेलियों की है। जिसमें से एक ने दूसरे के प्रेमी को अपने प्रेम जाल में फंसा लिया था। लेकिन उसे भी निभा नहीं पायी और फिर एक लखपति मिलमालिक के लड़के को फंसा लिया। नीलू आये दिन पति को छोड़कर अन्य लोगों के साथ रंगरेलियाँ मनाती रहती है। अपनी सहेली अचला को अपने पति की कैफियत देती है, "राजन को न जाने क्या हो गया है। यों ही नाराज होते रहते हैं। कितने दिन पहले से कह रखा था कि आज मुझे जाना है, अपना कुछ प्रोग्राम बना लेते। हफ्तों से क्लब नहीं गये।" उसने अपने पति से यहाँ तक कहा था कि वह दायरे में बंधकर नहीं रह सकती। इतना ही नहीं वह आधुनिक विचारों की है इसलिए पति के इच्छानुसार नहीं चल सकती।

इसका परिणाम यह होता है कि उसका पति अकेला हो जाता है। उसने अपनी पत्नी को बहुत स्वतंत्रता दे रखी है। वह स्वीकार करता है -- "मैंने शुरू से ही उसे बहुत बिगाड़ दिया। जो उसने चाहा, दिया। कभी राह में आड़े नहीं आया।" आधुनिक पति होने के नाते अब उसका एक ही काम रह गया है- उसके नाम आये, लंबे बिल चुकाना। पति का रोल जीवन में अब गौण हो गया है।

"जहाँ तक नीलू का प्रश्न है, उसके सामने सभी गौण हो जाते हैं।" अचला का कहना है कि जिसके प्रेमी को नीलू ने छीना था। अचला की देवेन्द्र के साथ बौद्धिक मैत्री थी जो यूनिवर्सिटी में नियुक्त हो गया था। साल भर से वह रोज हाजिरी देता था। वैसे दोनों के विवाह में बाधा भी नहीं थी। करीब-करीब हर शाम देवेन्द्र के साथ उसने बितायी थी। यदि कभी वह आ न सका तो यह फोन अवश्य करता था। कभी शहर से बाहर गया तो पत्र लिखता था। अचला तो उससे शादी करने के लिए अपनी पढ़ाई तक छोड़ने का विचार कर रही थी।

देवेन्द्र ने अचला की सहेली नीलू को देखा। उस सौंदर्य का देवेन्द्र पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह अचला को भूलकर नीलू की ओर आकर्षित हुआ। अचला को जब यह विषय मालूम हुआ तब उस पर ऐसा प्रभाव हुआ कि उसका नर्वस ब्रेक डाउन होता रहा। उसने यूनिवर्सिटी जाना छोड़ दिया। दूसरे विश्वविद्यालय से उसने एम.ए. किया, पर विवाह नहीं किया।

नीलू के पति राजन ने उसकी बीमारी को जानकर उससे कहा था, "तुम क्यों डिकेन्स की पात्री मिस हैविशम की तरह जिदगी नष्ट कर रही हो।" अचला उसके साथ पिकनिक पर जाने के लिए तैयार हो जाती है। राजन द्वारा दिए गये फूल को उसने बालों में लगा दिया। राजन और अचला आज के पूर्व कुछ और संबंधों से जुड़े, परंतु आज उनके संबंधों में परिवर्तन आ गया।

राजन नीलू का पति है और अचला नीलू की सहेली परंतु आज दोनों एक दूसरे की ओर आकर्षित हो रहे थे। अचला की नीलू से बदला लेने का बड़ा अच्छा मौका था। कारण नीलू ने अचला के प्रेमी को छीना था। वह नहीं चाहती कि नीलू उसी की तरह खंड-खंड होकर मृत्यु का साक्षात्कार करें।

अचला का शरीर राजन के स्पर्श से थरथरा रहा था। परंतु आगे बढ़ना नहीं चाह रही थी। उसे अपनी सिसकिया याद आयी और उसने निर्णय ले लिया "असीम सुख के उस क्षण में भी अचला ने स्पष्ट रूप से अनुभव कर लिया है कि इस मोहबंध को तोड़कर उसे जाना ही है।" कारण वह जानती है कि राजन उसे अस्थायी रूप से जुड़ जाना चाहता है। आजकल ऐसे संबंधों की बाढ़ आ गयी है। इस कहानी की नायिका नीलू के जीवन में कितने पुरुष आये परंतु उसके पति राजन ने उस पर कोई आपत्ति नहीं उठायी।

देती।

MS. MAHESHWARI Research Student, Nehru Arts and Science College, T.M.Palayam under the guidance of DR.P.Ganesan, Asst. Professor, Hindi, Sri Krishna Arts and Science College, Coimbatore.

मदुरै मंडल के हिंदी कार्यान्वयन की झलकियाँ



श्री रवि वल्लूरी, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक द्वारा मदुरै जंक्शन के हिंदी पुस्तकालय एवं राजभाषा प्रदर्शनी का निरीक्षण



दक्षिण रेलवे / Southern Railway
मदुरै मंडल / Madurai Division

செய்யுளமொழி பதிவெழுத்துகளைக் கண்டுபிடிக்கும் சிந்தனை ஒன்றுதான்.
भाषाएँ अनेक, भाव एक



भारत सरकार/GOVERNMENT OF INDIA
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway



पी.एन.एल. पी.एन.एल.
मंडल रेल जंक्शन/मदुरै DRMM/MDU

आशीर्चन

भाषा समान है, संधा नहीं। भारतीय भाषाएँ एक भाषा में विकसित हुए, लेकिन वे समान हैं। यही भाषाएँ भारत हैं। वे एक सूत्र में विकसित विविधता में एकता लाती हैं। विश्व भर की विभिन्न भाषाएँ आवश्यकतानुसार परिवर्तित हुई हैं। जैसे तमिल के महाकवि सुंदरगम भारतीय के कवि कालिदास, एनिमस सिंदर और सुंदरगम इसका अर्थ यह है कि भारत में विभिन्न भाषाएँ हैं पर विचार एक ही है। हम इस पुस्तिका के माध्यम से यह दर्शाना चाहते हैं कि तमिल और हिंदी में लगभग समान उच्चारण के कई शब्द हैं। अधिकांश शब्द यही अर्थ देता है और कुछ मिल या विपरीत अर्थ देता है। पर शब्द प्रयोग में हैं। आशा है कि यह पुस्तिका कर्मचारी के लिए काम आएगा और नया विचार प्रदान करेगा।

(पी.एन.एल.)

भारत सरकार/GOVERNMENT OF INDIA
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway



टी. रामेश बाबू T. RAMESH BABU
अवस्थापक अभियंता/मदुरै 1 DRM & 1 MR/MDU

सन्देश

भाषा मानव का विवेकाधिकार है। आवश्यकता की आवेगकार की जल्दी है। जितनी भाषाएँ थीं या हैं, सबकी आवश्यकता रही। हिंदी-तमिल भाषाओं के विभिन्न समानताओं में शब्द समानता की यही दर्शाया गया है। आशा है कि सबकी यह पसंद आएगा।
Language is a human prerogative. Necessity is the mother of invention. All the languages that were or are, all are needed. The words similarly among the various similarities of Hindi-Tamil languages is shown here. Hope everyone will like it.

(टी. रामेश बाबू)

तमिल और हिंदी में समतुल्य शब्दों का संकलन

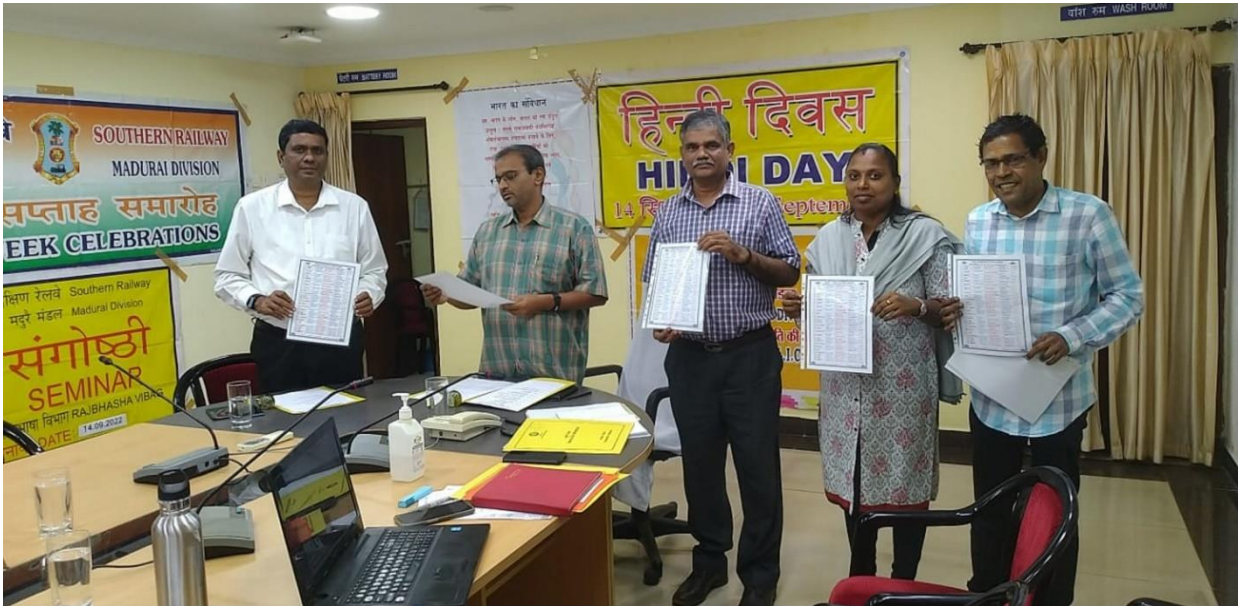


आज़ादी का
अमृत महोत्सव
प्रश्नमंच का
दृश्य मदुरै और
कारैककुडि में

मदुरै मंडल के हिंदी कार्यान्वयन की झलकियाँ



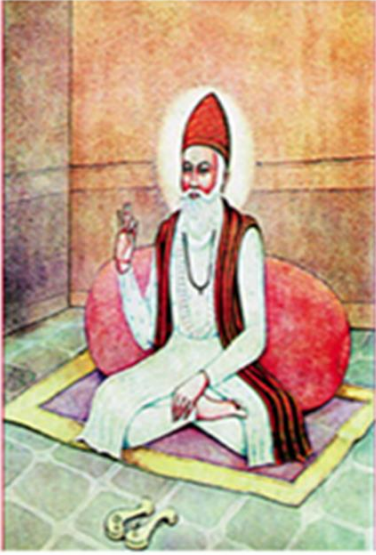
मदुरै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से लगातार सातवीं बार शील्ड प्राप्त करते हुए – श्री आर.नारायणन, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी, मदुरै एवं उप मुख्य मंडल इंजीनियर/समन्वयन/मदुरै



तमिल ,हिंदी,तेलुगु, कन्नड एवं मलयाळम के समतल्य शब्दों का संकलन विमोचित करते हुए श्री पी.अनन्त, मंडल रेल प्रबंधक, मदुरै

मदुरै मंडल के हिंदी कार्यान्वयन की झलकियाँ

संत कबीरदास के दोहे पुस्तिका
PAMPHLET ON SANT KABIRDAS KE DOHE



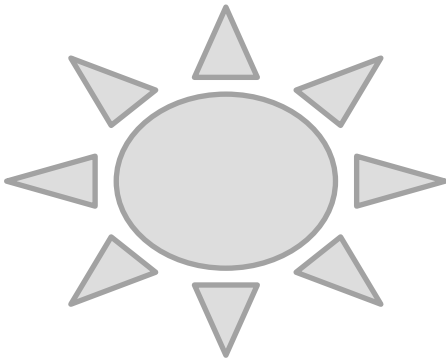
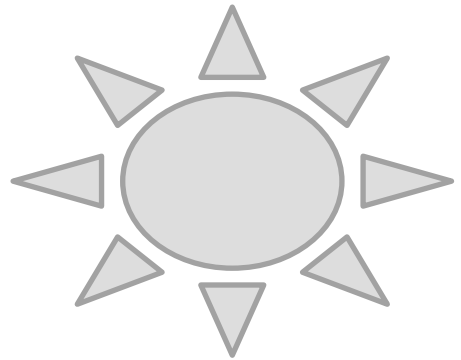
हिंदी मद्रास संस्थान 2022 के दौरान राजेश स्कूल के बच्चों के उत्कृष्ट अभिन
प्रतियोगिता के विनम्र निवेदन में प्रकाशित - सितंबर 2022

मद्रास

कबीर के दोहे Kabir ke dohe

- बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खलूर ।
पंथी को छया नहीं फल लागे अति दूर ॥
- कबीरा खड़ा बालार में सबकी मांगे खेर ।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बेर ॥
- कहे कबीर कैसे निबाहे, केर बेर को संग ।
वह झूमत रस आपनी, उसके फाटल अंग ॥
- तिनका कबहुँ न लिदिये जो पावन तर होए ।
कभू उडी अँखियाँ परे तो पीर घनेरी होए ॥
- सँई इतना दीनिए नामें कुटुंब समाय ।
मैं भी भूखा ना रहूँ साधु न भूखा लाय ॥

मदुरै के रेलवे स्कूल के छात्रों के लिए – दोहा प्रतियोगिता के संदर्भ में
तैयार की गयी पुस्तिका



समाचार पत्रों में मद्रुरे मंडल

मद्रुरे मंडल में ऑनलाइन हिंदी प्रचार-प्रसार

मद्रुरे/दक्षिण भारत

दक्षिण रेलवे के मद्रुरे मंडल में मंगलवार को मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक मंडल रेल प्रबंधक पी. अनंत की अध्यक्षता में हुई। अपर मंडल रेल प्रबंधक टी. रमेश बाबु ने बैठक का शुभारंभ स्वागत भाषण से किया।

इस बैठक में महत्वपूर्ण निर्णय लिखा गया कि जनवरी 2022 से शुरू होने वाले हिंदी वर्ग पूर्ण रूप से ऑनलाइन पर होगा। इसी प्रसार



वार्तालाप प्रशिक्षण, कार्यशाला आदि का भी आयोजन ऑनलाइन पर करने की व्यवस्था की जाएगी। इसका पहला कदम के रूप में आज संपन्न बैठक भी ऑनलाइन बैठक रही। कर्मचारियों की संख्या की कोई अब सीमा नहीं है। इच्छुक सभी कर्मचारियों को वर्ग में शामिल किया जा सकता है। इससे सन् 2022 के पहले ही हासिल होने की संभावना है। राजभाषा अधिकारी ए. श्रीनिवासन ने बैठक का संवादन किया।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत
Wed, 22 December 2021
epaper.dakshinbharat.com/c/65118687

एस. जयंती को शब्द सृजन पुरस्कार

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

मद्रुरे, मद्रुरे मंडल के नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी थी। कोविड महामारी के कारण वर्चुअल बैठक संपन्न हुई और विजेताओं का प्रमाण-पत्र संबंधित कार्यालय को भिजवा दिया गया था।

मद्रुरे मंडल की एस. जयंती, मुख्य कार्यालय अधीक्षक, संकर्म शाखा को शब्द सृजन प्रतियोगिता में दूसरा पुरस्कार मिला। प्रमाण पत्र एवं नकद पुरस्कार 1500 रुपए प्रदान किया गया था।

टी. रमेश बाबु, अपर मंडल रेल



प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी ने सुझाया कि मंडल रेल प्रबंधक के कर कमलों से पुरस्कार देकर प्रोत्साहित करना है। पी. अनंत, मंडल रेल प्रबंधक, जो हिंदी के बड़े समर्थक ने तत्काल स्वीकार और

मोहिदीन पिच्चै, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर-समन्वय की उपस्थिति में प्रदान किया। ए. श्रीनिवासन राजभाषा अधिकारी ने बताया कि ऑनलाइन पर सारी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में संकलन साहित्यिक सेतु बंधन का विमोचन



मद्रुरे @ पत्रिका. मद्रुरे रेल मंडल में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक हुई जिसकी अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक पी. अनंत ने की। बैठक की शुरुआत अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी टी. रमेश बाबु के स्वागत भाषण से हुई। इस बैठक में पी. अनंत ने मद्रुरे रेल मंडल की गृह पत्रिका विमोचन किया।

हिंदी और तमिल के समान शब्द जो वही अर्थ देता है या भिन्न

अर्थ देता है जैसे समान अर्थ वार्त, विव, अग्नि, अर्थ आदि और आसान भिन्न अर्थ देने वाले 700 शब्दों का संकलन साहित्यिक सेतु बंधन के तहत विमोचित किया गया। पी. अनंत ने बताया कि इस इंटरनेट एवं इंटरनेट में जोड़ा जाए राजभाषा अधिकारी ए. श्रीनिवासन ने बताया कि हिंदी विभाग, मद्रुरे मंडल पिछली बैठक में लिये गये निर्णय के अनुसार अपना सारा काम ऑनलाइन पर करता है।

शुभ लाभ

शब्द सृजन प्रतियोगिता में दूसरा पुरस्कार

मद्रुरे/ शुभ लाभ ब्यूरो। मद्रुरे मंडल के नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। कोविड महामारी के कारण वर्चुअल बैठक संपन्न हुई और विजेताओं का प्रमाण-पत्र संबंधित कार्यालय को भिजवा दिया गया था।

मद्रुरे मंडल की संकर्म शाखा की मुख्य कार्यालय अधीक्षक एस. जयंती को शब्द सृजन प्रतियोगिता में दूसरा पुरस्कार मिला।

प्रमाण पत्र एवं नकद पुरस्कार रु 1500 प्रदान किया गया।



अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी टी. रमेश बाबु ने बताया कि मंडल रेल प्रबंधक के कर कमलों से पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया जा रहा है। सभी विजेता कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

Bengaluru Edition
Apr 30, 2022 Page No. 2
Powered by : eReleGo.com

रेलगाई। राशिवार। 30-04-2022

RNI No. : TNHN/2013/35620
Regn. No. : TNCC/2013/24-1916
Printed at Patrika Chennai,
Gopuram Press, Chennai.



एस. जयंती को शब्द सृजन पुरस्कार

मद्रुरे/दक्षिण भारत

यहां दक्षिण रेलवे के मद्रुरे मंडल के नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी थी। कोविड महामारी के कारण वर्चुअल बैठक संपन्न हुई और विजेताओं का प्रमाण-पत्र संबंधित कार्यालय को भिजवा दिया गया था। मद्रुरे मंडल की मुख्य कार्यालय अधीक्षक एस. जयंती को शब्द सृजन प्रतियोगिता में दूसरा पुरस्कार मिला। प्रमाण पत्र एवं नकद 1500

रुपए प्रदान का पुरस्कार दिया गया। अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी टी. रमेश बाबु ने बताया कि मंडल रेल प्रबंधक के कर कमलों से पुरस्कार देकर प्रोत्साहित करना है। मंडल रेल प्रबंधक पी. अनंत जो हिंदी के बड़े समर्थक ने तत्काल स्वीकार और वरिष्ठ मंडल इंजीनियर समन्वय मोहिदीन पिच्चै की उपस्थिति में प्रदान किया। राजभाषा अधिकारी ए. श्रीनिवासन ने बताया कि ऑनलाइन पर सारी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी।



भारत सरकार

रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड)

प्रमाण-पत्र

श्रीमती. बी. वेण्माळ, मुख्य टंकक, मद्रुरे मंडल, दक्षिण रेलवे

को वर्ष 2019 में अपना अधिकार कार्य हिंदी में करने के लिए रेल मंत्रालय की

“व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना” के अंतर्गत 3000/- रुपये के पुरस्कार एवं

प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया जाता है।

नई दिल्ली
दिनांक: 09.05.2022

श्री० बरुन कुमार
निदेशक, राजभाषा
रेलवे बोर्ड



नराकास सदस्यों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

मद्रुरे/दक्षिण भारत 3

राजभाषा कार्यान्वयन समिति मद्रुरे द्वारा नराकास के सभी सदस्य कार्यशाला में भाग लेने के लिए मद्रुरे को एकदिवसीय संयोजित दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला का आयोजन पोस्ट मास्टर जनरल के कार्यालय में किया गया। पोस्ट मास्टर जनरल कार्यालय के प्रमुख टी.एस. जयंशंकर की अध्यक्षता में आयोजित यह कार्यशाला काफी प्रभावी रहा।

नराकास द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विभिन्न सदस्य कार्यालयों के कुल 54 सदस्य सदस्यों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

इस कार्यशाला में मुख्य रूप से भारत सरकार की राजभाषा नीतियां, नियम, अधिनियम राजभाषा के कार्यान्वयन में सहायक दस्ता एवं तकनीक तथा हिन्दी शिक्षण में सहायक विभिन्न ऐस पर चर्चा की गई।

इस कार्यशाला में प्रशिक्षण हेतु बैंक ऑफ इंडिया के राजभाषा अधिकारी विरग प्रजा, बैंक ऑफ इंडिया के वरिष्ठ प्रबंधक विजिता, मंडल रेलवे प्रबंधक एवं राजभाषा अधिकारी ए. श्रीनिवासन एवं एस. मीनाक्षी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यशाला का संवादन नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति मद्रुरे के सदस्य सचिव परसुरम द्वारा

समाचार पत्रों में मद्रुरे मंडल

पत्रिका

patrika.com

सि

CIT

‘हर घर तिरंगा’ प्रश्नमंच प्रतियोगिता आयोजित



मद्रुरे @ पत्रिका. आजादी के अमृत महोत्सव के तहत हर घर तिरंगा अभियान के उपलक्ष्य में मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय मद्रुरे में मंडल के कर्मचारियों के लिए हर घर तिरंगा प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विभिन्न स्टेशनों के कर्मचारियों ने भाग लिया।

गौरतलब है कि मंडल रेल प्रबंधक पञ्चनाभन अनंत ने सभी स्टेशनों पर अमृत महोत्सव मनाने का निर्देश दिया था। इसके अलावा मद्रुरे के उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं वरिष्ठ मंडल इंजीनियर-समन्वयन आर.नारायणन ने 13 से 15 अगस्त तक तिरंगा फहराने के पहले तिरंगे से संबंधित जानकारी प्रश्नमंच प्रतियोगिता के जरिए मद्रुरे मंडल के सभी कर्मचारियों को देने के निर्देश जारी किए थे। राजभाषा अधिकारी श्रीनिवासन के नेतृत्व में मद्रुरे मंडल ने प्रश्नमंच आयोजित किया। सुश्री मुत्तुलक्ष्मी एवं सचिन कुमार सिंह प्रश्नमंच के सहायक रहे।

संवाद चालिसा पुस्तक का विमोचन

मद्रुरे/ शुभ लाभ ब्यूरो। मद्रुरे मंडल रेल प्रबंधक पञ्चनाभन अनंत के निर्देशानुसार जनसंपर्क में आने वाले कर्मचारियों के लिए गत 1 अगस्त से दस कार्यदिवस के लिए दक्षिण रेलवे मद्रुरे मंडल में विशेष वार्तालाप प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। मद्रुरे मंडल के वरिष्ठ मंडल इंजीनियर/ समन्वय एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारी नारायणन ने सर्व प्रथम 40 टिकट परीक्षकों को सितंबर के पूर्व वार्तालाप प्रशिक्षण देने के लिए सुझाया। इस क्रम में संवाद चालिसा पुस्तिका का विमोचन किया गया। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक आर रतिश्री

ने पुस्तिका का विमोचन किया और प्रथम प्रति सीटीटीआई सेल्वम को दिया। यह पुस्तिका एक व्यावहारिक पुस्तिका है। चल टिकट निरीक्षकों को हिंदी में होने वाली तकालिफ का संकलन कर त्रिभाषा में यह पुस्तिका राजभाषा अधिकारी श्रीनिवासन द्वारा तैयार की गई है। इसमें 40 संवाद हैं जिसका प्रयोग अक्सर होता है। मंडल रेल प्रबंधक पी.अनंत एवं वरिष्ठ मंडल इंजीनियर/समन्वय व उप मुख्य राजभाषा अधिकारी आर.नारायणन ने प्रशिक्षित होने वाले प्रत्येक कर्मचारी को प्रोत्साहन स्वरूप रु300/- नकद पुरस्कार की घोषणा की है। सितंबर में होने



वाले हिंदी माह समारोह के दौरान पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरित किया जाएगा। श्रीनिवासन ने बताया कि यह प्रशिक्षण समय की मांग है।

मद्रुरे नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक



मद्रुरे/ शुभ लाभ ब्यूरो।

आगामी सितंबर महीने में सम्पन्न होने वाली मद्रुरे के नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के शिल्ड वितरण समारोह की पूर्व तैयारी के रूप में हिन्दी राजभाषा के सचिव परशुराम सहित 11 हिन्दी अधिकारी बुधवार

की उपसमिति की बैठक में शामिल हुए। इस मौके पर शील्ड संबंधी रिपोर्ट का विश्लेषण किया गया। संसदीय समिति संबंधित संगोष्ठी आदि की चर्चा की गई। सचिव से बैठक की तारीख मांगी गई। 10 प्रतियोगिताएं चलाने का निर्णय लिया गया।

समाचार पत्रों में मदुरै मंडल



विमोचन

दक्षिण भारत राष्ट्रमत



दक्षिण रेलवे मदुरै मंडल में 'संवाद चालीसा' पुस्तिका का विमोचन किया गया। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक आर रतिप्रिया ने पुस्तिका का विमोचन किया और प्रथम प्रति सीटीटीआई सेल्वम को दी। मंडल रेल प्रबंधक पद्मनाभन ने सुझाया कि जनसम्पर्क में आने वाले कर्मचारियों को हिन्दी में भी बातचीत करने के लिए वार्तालाप प्रशिक्षण देना है। वरिष्ठ मंडल इंजीनियर समन्वय एवं उपमुख्य राजभाषा अधिकारी नारायणन ने सर्वप्रथम 40 टिकट परीक्षकों को सितम्बर के पूर्व वार्तालाप प्रशिक्षण देने का निर्णय लिया। राजभाषा अधिकारी श्रीनिवासन ने पुस्तिका की तैयारी की। आज से 10 दिनों तक यह प्रशिक्षण चलेगा और 40 कर्मचारी इसका लाभ उठाएंगे।

दक्षिण भारत राष्ट्रमत Tue, 02 August 2022



75वतु कतन्तीर तिन पुकेकपड कण्काड्सी

मतुनर, अक. 13: 75वतु अतिकारीरामकिण्णन्
कतन्तीर अमुतपु पेकु विपेसिनर. वीकुनिल तेसि
विमूव मुन्निडु, यक्कोडि. एरुववते
कतन्तीरतिरक्कु मुन्पु वलियुत्ति "सेल्पी
नाडु पिरिविनेयिन् पायिन्ड" एन्नुम्
पोतु नडत्त तुयर्स सम् अमेककपडुन्नु.
पवङ्कनिल पुकेकपड इतिळ पलकुम् पडम्
कण्काड्सीतेरुमतुनर एडुत्तुक् कोन्डनर.
रयिल्वैव तिलुवक्कि रयिल्वैव अण्डियरकुक्कु
वैवकपडुत्तु. कतन्तीर कतन्तीर तिन अमुतपु
पोराडु वीर अमुकम् पेकुविमूवपन्थिविनाडि
पेकुमां इक्कण्काड् विना पोडु नडत्तु.
सिये तुवक्कि वैवत्तार. इतिने अड्सी मोडु
विमूविरु मतुनर अतिकारिसेविवासन् नडत्त
कोडु रयिल्वैव मेला तिनार. इप्पोडुयिल्
नर पत्तमनापन् अन्तत् वरक्कपिरिवि अण्डियरकु
तलमे वकित्तार. किण्णन्, मुकुपपोर्
कोडु अण्डियर नल पाण्डियन्, तिप्पिरिवि
अतिकारी सङ्करन्, 2त अमुता पङ्केरु मुकु
विककोडु अण्डियर नल पुरि पेरुनर.

சுதந்திர தினவிழா பட கண்காட்சி

மதுரை, ஆக. 13 - பின் இதே ரயில் நிலை
மதுரை ரயில் நிலை யத்தில் சுதந்திர தினவிழா
யத்தில் 75வது சுதந்திர வில் தியாகியாக பங்கேற்
அமுதப் பெருவிழாவை பது நமக்கு பெருமை
முன்னிட்டு 'சுதந்திரத் என்றார்.
திற்கு முன்பு நாட்டு பிரிவி கோட்ட ஊழியர் நல
னையின் போது ஏற்பட்ட அதிகாரி சங்கரன், உத
துயரங்கள் குறித்த சிறப்பு விக் கோட்ட நலஅதிகாரி
புகைப்படக் கண்காட்சி ராமகிருஷ்ணன் பேசினர்.
துவங்கியது. ரயில்வே ஊழியர்களுக்கு
பேரையூர் அருகே சுதந்திர தினவிழா வினாடி
டி. கிருஷ்ணாபுரத்தைச் வினா போட்டி நடந்தது.
சேர்ந்த தியாகி அழகம் ரயில்வே அதிகாரி சீனி
பெருமாள் 98, துவக்கி வாசன் நடத்தினார்.

வார்த்தக பிரிவு
ரயில்வே கோட்ட ஊழியர்கள் கிருஷ்ணன்,
மேலாளர் பத்மநாபன் முகப்பொற்பாண்டியன்,
அனந்த தலைமை வகித்து நிதிப்பிரிவு அலுவலர்
பேசுகையில் 'தியாகி அமுதா ஆகியோர் அணி
அழகம்பெருமாள், 1942ல் முதல் பரிசு வென்றது.
இதே ரயில் நிலையம் வீடுகளில் தேசியக்கொடி
எதிரே 'வெள்ளையனே ஏற்றுவதை வலியுறுத்தி
வெளியேறு' போராட்டத் ரயில்வே நிலையத்தில்
தில் பங்கேற்று கைதா 'செல்பி பாயிண்ட்' ஏற்
னார். 80 ஆண்டுகளுக்கு படுத்தப்பட்டது.